वर्ष 23, अंक 199, पृष्ठ 08, मूल्यः 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 14 अगस्त 2024 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

तब शेयर बाजार में सुनामी आ गई थी

अब हिंडनबर्ग रिपोर्ट बेअसर...

नई दिल्ली: वह 24 जनवरी, 2023 का दिन था। अमेरिकी शॉर्ट सेलिंग फर्म हिंडनबर्ग रिसर्च ने 106 पन्ने की एक रिपोर्ट प्रकाशित की और भारतीय शेयर बाजार में हाहाकार मच गया। दुनिया के बड़े उद्योगपतियों में एक गौतम अडानी की कंपनियों के शेयर धराशायी हो गए। अडानी ग्रुप के निवेशकों में बिकवाली की ऐसी होड़ मची कि शेयर बाजार में सूनामी आ गई। यह सिलसिला सप्ताह भर से भी ज्यादा वक्त तक जारी रहा। हिंडनबर्ग रिपोर्ट में उठाए गए 88 सवालों ने अडानी ग्रुप की कंपनियों के मार्केट शेयर में करीब 150 अरब डॉलर का चपत लगा दिया। करीब 18 महीने बाद 10 अगस्त, 2024 को हिंडनबर्ग ने अहले सुबह कहा कि वह भारत पर एक बड़ी रिपोर्ट जल्द प्रकाशित करने वाला है। फिर रात करीब 10 बजे उसने रिपोर्ट जारी कर दी। इस बार भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (एइक) की चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच और उनके पति धवल बुच पर आरोप मढ़े।

आखिर क्यों कुंद हो गई हिंडनबर्ग रिपोर्ट की धार?

हिंडनबर्ग ने कहा कि बुच दंपती के अडानी ग्रुप के साथ हितों के टकराव का मामला है। वह शनिवार का दिन था, इसलिए इंतजार था सोमवार का। हिंडनबर्ग रिपोर्ट 2.0 के बाद 12 अगस्त को शेयर बाजार खुला। लेकिन इस बार शुरूआती घंटे-दो घंटे के सिवा मार्केट में कोई खास हलचल नहीं हुआ। शुरूआती घंटों में अडानी ग्रुप के शेयरों में गिरावट जरूर आई लेकिन फिर बाजार स्थिर ही रहा। अगले दिन मंगलवार को तो अडानी के शेयरों ने भी रिकवरी शुरू कर दी। तो सवाल है कि आखिर 18 महीने में ऐसा क्या हो गया कि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट की धार बिल्कुल भोथरी हो गई? विपक्ष ने इस बार भी हिंडनबर्ग रिपोर्ट को हवा देने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। खासकर राहुल गांधी ने तो सीधे छोटे निवेशकों को संबोधित करते हुए उन्हें शेयर बाजार में निवेश रोकने तक की परोक्ष अपील कर दी। फिर भी निवेशकों पर असर क्यों नहीं हुआ?

18 महीने बाद आई हिंडनबर्ग की दूसरी रिपोर्ट

हिंडनबर्ग के आरोपों पर सेबी चीफ माधबी बुच ने अपने पति धवल बुच के साथ एक साझा बयान जारी किया। बुच दंपती ने रिपोर्ट आने के अगले ही दिन 11 अगस्त को 15 बिंदुओं में हिंडनबर्ग के आरोपों के जवाब दिए। उसी दिन हिंडनबर्ग ने कहा कि बुच दंपती ने उसके आरोपों को स्वीकार तो कर लिया है। इसके साथ ही उसने बुच दंपती के जवाबों पर नए सिरे से सवाल किए। इस बार बुच दंपती ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर भी शेयर बाजार पर कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ा। आखिर निवेशकों में कोई घबराहट क्यों नहीं है? क्या निवेशक ये मानकर चल रहे हैं कि हिंडनबर्ग की रिसर्च रिपोर्ट में कोई दम नहीं है और शेयर बाजार में सबकुछ चकाचक है? दरअसल, सेबी ने अडानी ग्रुप के खिलाफ पिछले साल जारी रिपोर्ट की जांच के सिलसिले में हिंडनबर्ग को 27 जून, 2024 को शो काउज नोटिस जारी किया था। ऐसे में एक धारणा यह भी बनी है कि हिंडनबर्ग ने इसी नोटिस से खुन्नस खाकर सेबी चीफ के खिलाफ मोर्चा खोला है।

पहली रिपोर्ट में लगे आरोपों की हुई गहन जांच

हिंडनबर्ग रिपोर्ट 2.0 के हवा-हवाई होने के पीछे सबसे बड़ा कारण अडानी ग्रुप के खिलाफ लगे आरोपों की एसआईटी जांच के बाद आया सुप्रीम कोर्ट का फैसला है। देश में व्यापक तौर पर संवैधानिक संस्थाओं के प्रति भरोसा काफी हद तक अडिग है। अडानी ग्रुप के खिलाफ हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में लगे आरोपों की जांच का मामला सुप्रीम कोर्ट के पास गया तो उसने विशेषों की एक जांच समिति बना दी। इस विशेषज्ञ दल की अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश एएम सप्रे ने की थी जबकि बैंकिंग और वित्तीय समेत अन्य संबंधित क्षेत्रों की पांच जानी-मानी शख्सियतें बतौर सदस्य समिति में शामिल थीं।

विशेषज्ञ समिति की जांच और सुप्रीम कोर्ट का फैसला समिति ने मई, 2023 में अपनी रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंप दी।

इस रिपोर्ट में कुछ अनियमितताओं की पहचान की गई, लेकिन यह भी कहा गया कि अडानी ग्रुप के खिलाफ लगे सभी आरोपों को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं हैं।

समिति की रिपोर्ट के आधार पर सुप्रीम कोर्ट ने 3 जनवरी, 2024 को फैसला दिया। सुप्रीम कोर्ट ने इस रिपोर्ट के आधार पर सेबी को अपनी जांच को निष्पक्ष और समयबद्ध तरीके से पूरा करने का आदेश दिया। कोर्ट ने यह भी कहा कि सेबी और अन्य नियामक संस्थाओं को अपनी प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ानी चाहिए ताकि निवेशकों का विश्वास बहाल हो सके। सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि यह जांच भारतीय शेयर बाजार की पारदर्शिता और विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है।

गरीबी मुक्त गांव हमारे प्रधानमंत्री का सपना और संकल्प है: शिवराज सिंह चौहान

तेलंगाना **केंद्रीय** ग्रामीण विकास और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि गांव में कोई गरीब क्यों रहे, इसलिए हमारे प्रधानमंत्री का सपना है, संकल्प है गरीबी मुक्त गांव। केंद्रीय मंत्री आज तेलंगाना के राजेंद्र नगर में राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान की 66वीं आम परिषद की बैठक में भाग लेने के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे।

चौहान ने कहा कि गांव में कोई भी गरीब नहीं होना चाहिए और सभी को रोजगार मिलना चाहिए। महात्मा गांधी का सपना था ग्राम स्वराज; जब हम ग्रामीण विकास की बात करते हैं, तो बुनियादी ढांचे का विकास सबसे आगे आता है।

अरुणाचल प्रदेश के लोगों की देशभक्ति राज्य की जीवंत सांस्कृतिक विरासत में झलकती है: प्रधानमंत्री

अरुणाचल प्रदेश **प्रधानमंत्री** नरेन्द्र मोदी ने आज अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी कामेंग के सेप्पा में #हरघरतिरंगा यात्रा पर प्रसन्नता जताई। उन्होंने कहा कि देशभक्ति अरुणाचल प्रदेश की जीवंत सांस्कृतिक विरासत में स्पष्ट रूप से झलकती है। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू के एक्स पर एक वीडियो पोस्ट पर टिप्पणी करते हुए मोदी ने लिखाः "अरुणाचल प्रदेश एक ऐसी भूमि है जहां देशभक्ति हर नागरिक के दिल में गहराई से निहित है।

कोलकाता रेप-मर्डर केसः जेडीयू नेता जमा खान ने की कड़ी कार्रवाई की मांग

पटना। जेडीयू नेता व बिहार सरकार में मंत्री जमा खान ने पश्चिम बंगाल में महिला डॉक्टर से रेप और फिर हत्या के मामले पर कहा कि इस घिनौने कृत्य में शामिल लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

जेडीयू नेता ने कहा, ह्लआरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। अपराधियों की कोई जाति नहीं होती है, अपराधी तो अपराधी होता है, उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए।

इससे पहले, जेडीयू नेता नीरज कुमार सिंह बबलू ने महिला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म मामले पर रोष व्यक्त कर पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की थी। उन्होंने कहा वहां कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब है, जिसे ध्यान में रखते हुए राष्ट्रपति शासन की जरूरत है।

इस घटना के विरोध में देशभर में डॉक्टर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। दिल्ली एम्स में इस प्रदर्शन का व्यापक असर देखने को मिल रहा है।

इस बीच राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने मंगलवार को कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज की द्वितीय वर्ष की पीजी छात्रा के कथित यौन उत्पीड़न का स्वतः संज्ञान लिया और दो सप्ताह के भीतर इस मामले में विस्तृत रिपोर्ट मांगी।

इससे पहले बलात्कार और हत्या की शिकार ट्रेनी डॉक्टर के परिवार के सदस्यों ने मंगलवार को कलकत्ता हाई कोर्ट में एक याचिका लगा कर मांग की कि मामले की अदालत की निगरानी में जांच की जाय। पीड़िता के परिवार के सदस्यों ने याचिका में मामले की जांच की प्रगति पर संदेह जताया है ।

गुजरात में बिना इजाजत लंबी छुट्टी या विदेश यात्रा पर गए शिक्षकों पर कार्रवाई के आदेश

गांधीनगर। गुजरात में बिना अनुमति के लंबी छुट्टी या विदेश यात्रा पर गए शिक्षकों का मामला अब गंभीर रूप ले चुका है। हाल ही में हुई एक जांच में आए चौंकाने वाले आंकड़ों ने इस मुद्दे को और तूल दे दिया है।

राज्य के विभिन्न जिलों से मिली रिपोर्टों के अनुसार, 17 जिलों के 32 शिक्षक बिना अनुमति के विदेश यात्रा पर हैं, जबकि कई अन्य शिक्षक लंबे समय से छुट्टी पर हैं। अहमदाबाद जिले के सरकारी स्कूलों में चार शिक्षक बिना अनुमति के विदेश यात्रा पर पाए गए। इनमें से एक शिक्षक 177 दिनों से छुट्टी पर है, जिससे सवाल उठ रहा है कि स्कूल प्रबंधन ने इतनी लंबी छुट्टी कैसे मंजूर कर दी। इसके अलावा, अहमदाबाद ग्राम के सरकारी प्राथमिक स्कूलों में आठ शिक्षक 90 दिन से अधिक समय से छुट्टी पर हैं, जिनमें से सात शिक्षक विदेश यात्रा पर हैं। यह स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।

जोधपुर जेल में बंद आसाराम को कोर्ट ने दी बड़ी राहत

पहली बार पैरोल की मिली मंजूरी

जोधपुरः नाबालिग से रेप के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे आसाराम को मंगलवार को कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने पहली बार उनकी सात दिन की पैरोल को मंजूर कर लिया है। यह पैरोल कोर्ट ने आसाराम को स्वास्थ्य कारणों से दी है। हाईकोर्ट जस्टिस जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी की कोर्ट ने उसे इलाज के लिए महाराष्ट्र के माधोबाग जाने की इजाजत दी है। पैरोल के दौरान आसाराम पुलिस हिरासत में रहेगा। बता दें कि आसाराम की ओर से पहले भी इलाज के लिए पैरोल की अर्जी दी जा चुकी है, लेकिन हर बार उसे खारिज कर दिया गया था।

जोधपुर में आयुर्वेदिक डॉक्टरों ने किया था इलाज

आसाराम पहले भी जोधपुर के एक निजी आयुर्वेदिक अस्पताल में इलाज करवा चुका हैं। यहां उसे पुलिस सुरक्षा में रखा गया था। इस दौरान उसका इलाज पुणे के डॉक्टरों की देखरेख में करवाया गया था। बाद में तबीयत बिगड़ने पर उसे जोधपुर के एम्स में भर्ती कराया गया था। इसके बाद अब आसाराम ने फिर से पैरोल के लिए अर्जी दी, जिसे स्वीकार कर लिया गया । कोर्ट ने आसाराम को इलाज के लिए 7 दिन की पैरोल दे दी गई।

2013 से जोधपुर जेल में बंद है आसाराम

आसाराम इससे पहले भी अपनी बीमारी का हवाला देकर पैरोल मांग चुके हैं, लेकिन उसकी मांग पूरी नहीं हो सकी थी। 20 जून को, आसाराम ने 20 दिन की पैरोल के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाया था।

UPI पर सरकार ने कसी नकेल,नहीं चलेगी ऐप्स की मनमानी

UPI : पेमेंट से पहले करना होगा ये काम

नई दिल्ली:

UPI Payment पर सरकार नया फैसला लेने जा रही है। अब यूजर्स को इससे काफी मदद मिलने वाली है। आज हम आपको इसके बारे में जानकारी देने वाले हैं। साथ ही बताएंगे कि अब यूजर्स कैसे इसका आनंद उठा सकते हैं। ये काफी खास होने वाला है। क्योंकि यूपीआई के कुछ नियमों में बदलाव होने वाला है और इसके बाद यूजर्स के लिए काम काफी आसान होने वाला है। इसको लेकर NPCI की तरफ से ऐप्स से बात चल रही है।

UPI से फायदा-

UPI पेमेंट का इस्तेमाल बहुत सारे लोग करते हैं। अगर आप भी इसका इस्तेमाल

करते हैं तो नए नियम के बारे में जरूर जान लेना चाहिए। ये आपकी काफी मदद करने वाला है। साइबर फ्रॉड की तरफ से भी इसका फायदा उठाया जा रहा है। यूपीआई को सुरक्षित बनाने की मांग भी लंबे समय से हो रही है। इसमें फेस ऑथेंटिकेशन को भी मुद्दा बनाया जा रहा है। यानी अब आपको पेमेंट करने के लिए फेस ऑथेंटिकेशन का इस्तेमाल करना होगा जो आपके लिए काफी फायदेमंद साबित होने वाला है।

NPCI ने लिया कदम-

NPCI ने इस दिशा में नया कदम उठा लिया है और कंपनियों से इसके लिए बातचीत भी की जा रही है। यानी कंपनियों के कहा जा रहा है कि वह बहुत जल्द इसे अपनी लिस्ट में शामिल करें क्योंकि इससे उन्हें काफी फायदा होने वाला है। अगर ऐसा होता है कि सीधी बात है कि आप बायोमेट्रिक्स की मदद से पमेंट कर पाएंगे। हालांकि अभी तक सामने आई रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि यूजर्स पिन का भी इस्तेमाल कर पाएंगे।

हरियाणा सरकार राम रहीम के लिए रास्ता बना रही है : अंशुल छत्रपति

सिरसा। डेरा प्रमुख गुरमीत राम रहीम एक बार फिर फरलो पर रोहतक की सुनारिया जेल से रिहा हुआ है। इस पर दिवंगत पत्रकार रामचंद्र छत्रपति के बेटे अंशुल छत्रपति ने सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार उसकी मदद कर रही है। रामचंद्र छत्रपति की सिरसा में 24 अक्टूबर 2002 को गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

अंशुल छत्रपति ने कहा कि जब से डेरा प्रमुख को सजा हुई है तभी से वो लगातार जेल से बाहर आ रहा है। पहले जब उसे पैरोल पर बाहर निकाला गया था, तभी मैंने कहा था कि हरियाणा सरकार गुरमीत राम रहीम को जेल से बाहर निकालने के लिए रास्ता तैयार कर रही है। कभी कृषि भूमि की हार्वेस्टिंग के लिए, कभी मुंह बोली बेटी की शादी के नाम पर उसे पैरोल मिलती रही है।

अखिलेश यादव की सपा बलात्कारी और अपराधी संरक्षित पार्टी: गिरिराज सिंह

बेगूसराय। कन्नौज की पूर्व सांसद डिंपल यादव का दाहिना हाथ रहे नवाब सिंह यादव के पॉक्सो एक्ट में गिरफ्तार होने के बाद केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने सपा को बलात्कारी और अपराधी संरक्षित पार्टी बताया है।

पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, ह्लआज उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी पहले अपराधी पार्टी थी अब बलात्कारी पार्टी भी हो गई। अयोध्या में भी एक मुसलमान ने हमारी बेटी के साथ कुकृत्य किया। अब बताया जा रहा है कि कन्नौज में भी वह (नवाब सिंह यादव) डिंपल यादव का प्रतिनिधि था, यह भी उसी समाज से आता है। इसका मतलब यह है कि अखिलेश यादव बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन उनकी पार्टी पूरी तरह से बलात्कारी और अपराधी संरक्षित पार्टी हो गई।

बता दें, कन्नौज में सपा नेता और डिंपल यादव के करीबी रहे नवाब सिंह यादव को नाबालिग लड़की से छेड़छाड़ करने के आरोप में पुलिस ने सोमवार को गिरफ्तार किया।

बताया जा रहा है कि नाबालिग अपनी बुआ के साथ कन्नौज के पास एक गांव में बने नवाब सिंह के डिग्री कॉलेज में नौकरी मांगने गई थी।

सेना कमांडर ने सीमावर्ती इलाकों का किया दौरा

आतंकवादी विरोधी अभियानों का लिया जायजा

जम्मू। उत्तरी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचिंद्र कुमार ने मंगलवार को जम्मू-कश्मीर के डोडा और किश्तवाड़ जिलों में सीमावर्ती इलाकों का दौरा कर आतंकवाद विरोधी अभियानों की समीक्षा की।

सेना कमांडर ने दोनों जिलों के सीमावर्ती इलाकों का दौरा किया और सैन्य बलों की तैनाती का आकलन किया। अधिकारियों ने बताया कि कमांडर ने आतंकवाद रोधी डेल्टा फोर्स के सीमावर्ती इलाकों का दौरा किया और जवानों से बातचीत की।

उत्तरी कमान ने अपने एक्स पर कहा, "लेफ्टिनेंट जनरल एमवी सुचिंद्र कुमार ने क्षेत्र में बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों के मद्देनजर चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियानों की समीक्षा के लिए डोडा और किश्तवाड़ क्षेत्र में आतंकवाद रोधी बल (डेल्टा) के अग्रिम ठिकानों (सीमावर्ती इलाकों) का दौरा किया।"

सेना ने कहा कि कमांडर ने क्षेत्र में अतिरिक्त बलों की तैनाती के विकल्पों का आकलन किया। उन्होंने पुलिस और अर्धसैनिक बलों के साथ तालमेल बनाने पर भी जोर दिया।

सेना ने कहा, "सेना कमांडर ने सभी सैनिकों को अभियानों की गति को बनाए रखने के लिए कहा, ताकि चल रहे और आने वाले कार्यक्रमों के दौरान सुरक्षा सुनिश्चित हो।"

पिछले दो महीनों से जम्मू डिवीजन के पहाड़ी जिलों पुंछ, राजौरी, डोडा, कठुआ, रियासी और उधमपुर में आतंकवादियों ने हमले किए हैं।

आतंकवादियों की तलाश के लिए इलाके में बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

चार दिन पहले कोकरनाग के अहलान गंडोले इलाके में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई थी, जिसमें सेना के दो जवान शहीद हो गए थे और एक नागरिक की मौत हो गई थी। तलाशी अभियान को किश्तवाड़-डोडा क्षेत्र तक बढ़ा दिया गया है।

बीईओ उरुवा के औचक निरीक्षण में कई शिक्षक मिले अनुपस्थित

बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ और लापरवाही कत्तई बर्दाश नहीं : कैलाश सिंह

मेजा। मंगलवार को विकास खंड उरुवा के प्रभारी खंड शिक्षा अधिकारी कैलाश सिंह द्वारा सुबह-सुबह ब्लॉक के आधा दर्जन विद्यालयों का ताबड़तोड़ आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान वे सबसे पहले कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय बरी का आकस्मिक निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के समय समस्त स्टाफ उपस्थित मिले। नामांकित 100 बालिकाओं में 94 बालिकाएं उपस्थिति थीं। कंप्यूटर क्लास में बच्चे कार्य करते मिले। खंड शिक्षा अधिकारी के निरीक्षण के समय ही विद्यालय की छात्रा रूबी यादव कक्षा 7 की तबियत अचानक खराब हो गई,जिसे एंबुलेंस बुलाकर तत्काल सीएचसी रामनगर अस्पताल वार्डन और एक परिचारक के साथ भेजा गया तथा उनके अभिभावक को भी सूचित कर बुला लिया गया। निरीक्षण के पश्चात खंड शिक्षा अधिकारी स्वयं सीएचसी रामनगर अस्पताल जाकर डॉक्टर से जानकारी ली। डॉक्टर द्वारा छात्रा को एक सप्ताह आराम करने की सलाह देते हुए प्राथमिक उपचार किया गया। जिन्हे अभिभावक के साथ फिर घर भेज दिया गया। इसके पश्चात प्राथमिक विद्यालय पकरी सेवार का निरीक्षण किया गया। जहां नामांकित 119 बच्चों में कुल 82 बच्चे उपस्थित मिले। एक शिक्षक अरुण कुमार भारती बिना किसी सूचना अनुपस्थित मिले। विद्यालय के प्रधानाध्यापक 12 बजे विद्यालय पहुंचे। दोनों लोगों को पोर्टल पर ऑनलाइन अनुपस्थित कर दिया गया। फिर प्राथमिक विद्यालय डूहिया का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण में नामांकित 57 बच्चों में 35 बच्चे उपस्थित मिले तथा समस्त स्टाफ उपस्थित पाए गए। उसके उपरांत प्राथमिक विद्यालय बारा दशरथपुर का निरीक्षण किया गया। जहां नामांकित कुल 55 छात्रों में से 41 बच्चे रजिस्टर में उपस्थित दर्ज किए गए थे,जबकि मौके पर 30 बच्चे ही उपस्थित मिले। कारण जानने पर अवगत कराया गया कि गांव में किसी बच्चे की मृत्यु होने के कारण,आज पास के बच्चे घर चले गए। जिस हेतु प्रधानाध्यापक से स्पष्टीकरण मांगा गया है तथा साथ ही सहायक अध्यापक संगीत उपाध्याय बिना किसी सूचना अनुपस्थित मिली। जिन्हे पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन अनुपस्थित कर दिया गया। जब खंड शिक्षा अधिकारी उरुवा कैलाश सिंह से इस सबंध में बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि जो भी शिक्षक व शिक्षिकाएं बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ और लापरवाही करेंगे उन्हें कत्तई बक्शा नही जाएगा। उनके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी और विभाग के उच्च अधिकारियों को लिखकर भेज दिया जाएगा। एक तरफ जहां सरकार और विभाग द्वारा परिषदीय विद्यालयों के छात्रों के पठन-पाठन को लेकर इतनी गंभीर है वहीं शिक्षक अपने कार्यों के प्रति बड़ी लापरवाही कर रहे है।

जसरा में बंद कमरे में छात्र-छात्रा के होने की सूचना पर पहुंची पुलिस, थाने तक पहुंचा मामला

जसरा। जसरा बाजार के एक इंटर कॉलेज के पास एक कमरे में छात्र छात्रा के होने की सूचना पर एक ओर जहां कॉलेज के प्रधानाचार्य मौके पर पहुंचे वहीं सूचना पर पुलिस भी पहुंच गई। लेकिन उक्त सूचना गलत निकली। बाजार में मंगलवार की दोपहर बाद एक स्कूल के पास स्थित एक कमरे में प्रेमी युगल छात्र छात्रा के बारे में लोगों को पता चला। बताया जाता है कि किसी ने कमरे में बाहर से ताला लगा दिया। जब इसकी सूचना पास के इंटर कॉलेज में हुई तो स्कूल के प्रधानाचार्य अध्यापकों के साथ मौके पर पहुंच गए। वहां ताला बंद होने के कारण प्रधानाचार्य ने डायल 112 को सूचना दे दी। डायल 112 की सूचना पर सिपाही मौके पर पहुंचे। डायल 112 की पुलिस ने थाना घूरपुर को सूचना दी। सूचना पर घूरपुर थानाध्यक्ष भी मौके पर आ गए। सभी की उपस्थिति में कमरे का ताला तोड़ा गया। तो कमरे के अंदर कोई नहीं मिला। इसके बाद घूरपुर पुलिस अपने साथ स्कूल के प्रधानाचार्य को थाने ले गए। प्रधानाचार्य के घूरपुर जाने की जानकारी होते ही विद्यालय के शिक्षक व कर्मचारी भी थाने पहुंच गए। जहां गलत सूचना दिए जाने की चर्चा होती रही। इन सबको लेकर बाजार में चचाओं का बाजार गर्म रहा। जसरा स्थित लगभग आधा दर्जन स्कूल व कॉलेज है। जहां पर किशोर व किशोरिया शिक्षा प्राप्त करते हैं। लोगों का कहना है कि कभी-कभी इस तरह की घटनाएं देखने को मिलती है। जिससे आशंका वश किसी ने गलत सूचना फैला दी। जिससे पुलिस व स्कूल के सभी कर्मचारी परेशान रहे।

न्यूज झरोखा

धूमधाम से मनाया गया विद्यालय का संस्थापक दिवस समारोह

उतरांव। जनपद प्रयागराज क्षेत्र के बाला प्रसाद कुशवाहा इंटरमीडिएट कॉलेज बलरामपुर बरेही के अभय राज सभागार में विद्यालय का संस्थापक दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर विद्यालय के प्रीती, प्रिया, वर्तिका, सुलेखा आदि छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना, स्वागत गीत, सावन गीत, नाटक आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर आए लोगों का मन मोह लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चीफ स्टैंडिंग काउंसिल जे एन मौर्य हाई कोर्ट के स्थाई अधिवक्ता रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में कल्पना वर्मा आर्य कन्या डिग्री कॉलेज प्रयागराज की उप प्राचार्य रही। बतौर मुख्य अतिथि जे एन मौर्य ने कहा कि शिक्षा से ही व्यक्ति और समाज आगे बढ़ सकता है। उनके द्वारा शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। प्राचार्य विनोद कुमार, हरिप्रसाद , बंदना सिंह,सोभा,प्रतिभा, सुरेन्द्र प्रताप,परमानंद एनसीसी अफसर, अनिल सिंह, रावेद्र कुमार, प्रवक्ता राम सजीवन , किरण आदि लोगों के भी द्वारा अपने विचारों को प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर विद्यालय के प्रबंधक डॉक्टर राज अतुल मुख्य अतिथि का फूल माला पहनाकर स्वागत कर उन्हें अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक गंगा प्रसाद ने करते हुए आए लोगों के प्रति आभार जताते हुए धन्यवाद अर्पित किया। इस मौके पर शैलेश तिवारी, सहित विद्यालय के समस्त प्रबंध तंत्र के पदाधिकारी एवं सदस्य गण मौजूद रहे।शिक्षक व अतिथि गण को प्रबंधक डॉक्टर राज अतुल, आभार जताया।

भाजपा जिला उपाध्यक्ष का मनाया गया जन्मदिन

सहसों। थानापुर स्थित दुबे जी भोजनालय पर मंगलवार को भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ कार्यकताओं द्वारा एक वैचारिक बैठक कर आगामी राजनैतिक विषयों पर विचार विमर्श किया गया। बैठक के दौरान जिला उपाध्यक्ष भाजपा गंगापार अनिरुद्ध सिंह पटेल का कार्यकताओं ने बड़े ही उत्साह के साथ माल्यार्पण एवं केक काटकर जन्मदिन मनाया। इस मौके पर अनिरुद्ध सिंह पटेल ने जन्मदिन का केक सभी लोगों को खिलाकर मुंह मीठा कराया। इस अवसर पर भाजपा नेता राकेश बहादुर सिंह, प्रबंधक जोखू लाल तिवारी, समाजसेवी एवं पूर्व प्रधान पिंटू दुबे जी, संदीप दुबे, पंडित शीतला प्रसाद व्यास, मनोज सिंह, अशोक चौधरी, भास्कर पटेल, भूपेंद्र मिश्रा पप्पू , राजकुमार मोदनवाल एवं नीरज जायसवाल सहित आदि लोग जन्मदिन की बधाई देते उपस्थित रहे।

श्री शिवमहापुराण कथा सार सुनकर भाव-विभोर हुए बरना, जंघई निवासी

जंघई। पंचमूर्ति सेवा समिति शनि धाम बरना, जंघई में आयोजित श्री शिवमहापुराण संगीतमयी अमृत कथा में मंगलवार को कथा समापन दिवस पर कथा वाचक आचार्य मनीष शरण महाराज श्रीधाम अयोध्या ने शिव की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान शिव ही मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त कर सकते हैं, शिव की भक्ति से सुख व समृद्धि प्राप्त की जा सकती है इस अलौकिक शिव महापुराण की कथा सुनना अर्थात पाप से विमुक्त होना है। शिव महापुराण कथा सुनने के लिए बड़ी संख्या में भक्त पहुंचे और कथा सार सुनकर श्रोता झूम उठे। इस अवसर पर मुख्य यजमान अनिल सिंह, सुनील सिंह, आचार्य लोलारख नाथ मिश्र, जदूराज सिंह, राजमणि सिंह, अजयपाल सिंह, मुन्ना सिंह, सोनू सिंह, रोशन सिंह, गोलू सिंह, शुभम सिंह, शक्ति सिंह, प्रदीप सिंह, सचिन सिंह, बलवंत सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

भक्तों ने शिवालय व घरों में किया शिवजी का रुद्राभिषेक

सहसों। सावन के पावन महीने में क्षेत्र के शिवालियों एवं घरों में शिव भक्तों द्वारा भगवान भोलेनाथ का पूजन अर्चन करते हुए विभिन्न प्रकार के पदार्थो से विभिन्न विधियों के साथ शिवजी की स्तुति एवं वंदन करते हुए रुद्राभिषेक एवं महा रुद्राभिषेक कर सुख समृद्धि की कामना कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। जिससे क्षेत्र के शिवालियों एवं घर-घर हर हर महादेव के उद्घोष से पूरा क्षेत्र शिवमय हो रहा है। इसी प्रकार क्षेत्र के प्राचीन बुद्धेश्वर महादेव मंदिर गुलालपुर में मंगलवार को शिव भक्त ठाकुर सत्यम सिंह, अमित सिंह, अजीत मिश्रा, पवन पांडे, अधिवक्ता डॉ मनीष तिवारी, प्रियांशु मिश्रा आदि ने जनकल्याण एवं सुख समृद्धि के लिए भगवान शंकर की आचार्य विद्वान द्वारा वैदिक मंत्रों से विधि विधान पूर्वक एक साथ जलाभिषेक एवं रुद्राभिषेक किया। तत्पश्चात घंटा घरियार एवं शंख ध्वनि के साथ भगवान शिव जी की महा आरती करके आशीर्वाद प्राप्त कर भक्तों में प्रसाद वितरण कराया गया। इस अवसर पर काफी संख्या में शिव भक्त हर हर महादेव का उद्घोष करते उपस्थित रहे।

शंकरगढ़ के ग्राम सभा पगुवार के प्रधान बने रहेंगे गुलाब सिंह

प्रयागराज, शंकरगढ़। विकास खंड के ग्राम सभा पगुवार को न्यायालय से क्लीन चिट मिलने पर ग्रामीणों ने मिठाइयां बांटकर कर एवं एक दूसरे को लड्डू खिलाकर खुशियां मनाई। विगत वर्षों में हुए ग्राम प्रधान के चुनाव में गुलाब सिंह एक मत से विजई हुए थे। जिस पर विपक्षी द्वारा मामले को न्यायालय तक पहुंच गया था। जिस पर मंगलवार को माननीय न्यायालय ने गुलाब सिंह को क्लीन चिट दे दी एवं विपक्षी की याचिका को खारिज कर दिया। इस खबर की जानकारी होने पर ग्राम सभा में खुशी की लहर व्याप्त एवं लोगों ने ग्राम प्रधान को बधाई दी। बधाई देने वालों में प्रधान कामता सिंह, विद्या पति सिंह, बलराम साहू, भुवन साहू, शराफत मिश्रा आदि रहे।

तिरंगा यात्रा में देश भक्ति गीतों पर झूमे लोग

अखंड भारत संदेश

कोरांव में निकाली गई तिरंगा यात्रा में भाजपा के कई नेता व जनप्रतिनिधि हुए शामिल

कोरांव। नगर पंचायत कोरांव में मंगलवार को भाजपा कार्यकताओं ने हर घर तिरंगा अभियान को लेकर विशाल तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा की शुरूआत विकासखंड मुख्यालय से की गई। नगर में भ्रमण करते हुए पत्रकार चौराहा तथा गोपाल विद्यालय इंटर कॉलेज पर तिरंगा यात्रा का समापन किया गया। तिरंगा यात्रा में ब्लॉक प्रमुख मुकेश कोल, नगर पंचायत अध्यक्ष ओमप्रकाश केसरी, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष नरसिंह कुमार केसरी उर्फ गोपाल जी समेत भाजपा के कई दिग्गज नेता व जनप्रतिनिधि शामिल रहे। यात्रा में देशभक्ति गीतों पर युवा झूम उठे। प्रदेश उपाध्यक्ष युवा मोर्चा रोहित मिश्रा,भाजपा नेता नीरज त्रिपाठी, जिला अध्यक्ष विनोद कुमार प्रजापति ने झंडा दिखाकर तिरंगा यात्रा की शुरूआत की, जिसमें भारी संख्या में भाजपा के कार्यकर्ता पदाधिकारी मौजूद रहे। जिसमें वरिष्ठ भाजपा नेता तुलसीदास राणा, राजेश्वरी प्रसाद तिवारी, अजीत प्रताप सिंह, ग्राम प्रधान बंशीपुर भालेंदु मिश्रा, विजय कुमार सिंह अध्यक्ष सहकारी समिति विजय सिंह, सुमित पांडेय, शशि द्विवेदी, नरेंद्र सिंह सहित भारी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

इविवि ने स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए की अहम घोषणा, पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ाई

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्व विद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए पंजीकरण करा चुके अभ्यर्थियों में से 50 प्रतिशत से अधिक ने सोमवार तक पंजीकरण शुल्क नहीं जमा किया था।सोमवार ही पंजीकरण और शुल्क जमा करने की आखिरी तारीख थी। ऐसे में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए पंजीकरण, कार्यक्रम चयन, संशोधन और शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि बढ़ाकर 20 अगस्त कर दी है। अब इसके बाद ही विश्वविद्यालय प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ करेगा। इलाहाबाद विश्व विद्यालय को एनटीए ने सीयूईटी का परिणाम भी भेज दिया है। अब परिणाम मिलने के बाद इवि प्रशासन आवेदनों का सत्यापक कर सकेगा। इसमें कुछ समय लगेगा। ऐसे में इवि प्रशासन ने आखिरी तारीख बढ़ाने का निर्णय लिया।

शिक्षा मित्र पाच सितंबर को लखनऊ में करेंगे धरना प्रदर्शन

करछना। प्रयागराज उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षा मित्र संघ द्वारा 5 सितंबर को लखनऊ में प्रस्तावित धरने में प्रतिभाग करने हेतु ब्लाक करछना के पदाधिकारियों से एक बैठक आयोजित कर धरने को सफल बनाने हेतु रणनीति पर चर्चा की ।जिसमे शिक्षा मित्र ब्लाक अध्यक्ष करछना सिद्ध राज सिंह ने समस्त महिला एवं पुरुष शिक्षा मित्र को लखनऊ चलने की अपील की जिससे ज्यादा संख्या बल के साथ सरकार से अपनी जायज मांगों को पूर्ण कराया जा सके।करछना ब्लाक के सभी न्याय पंचायतों से आए शिक्षा मित्रों ने आपने संकुल से एक एक शिक्षा मित्र को लखनऊ चलने को कहा और सबने सहमति से धरने को सफल बनाने की अपील की बैठक में अध्यक्ष सिद्ध राज सिंह मंत्री अनंत लाल पंकज कुमार राव राजकरण यादव रजनीकांत गौरव राकेश पांडे नागेन्द्र सिंह विजय शंकर गुप्ता श्री प्रकाश तिवारी दारा सिंह गंगा प्रसाद रमेश कुमार ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह मिथिलेश सिंह रीना सिंह प्रीति सिंह आदि शिक्षा मित्र शामिल हुए।

वृक्षारोपण से होगा शुद्ध एवं समृद्ध मानव जीवन का आधार : रेंजर अजय कुमार

प्रयागराज, शंकरगढ़। वन रेंज टंडनवन में वन मित्र अभियान के तहत बारा विधायक एवं वन विभाग द्वारा वृक्षारोपण कर नागरिकों एवं ग्रामीणों को वृक्ष लगाने हेतु जागरूक किया गया। वन विभाग द्वारा चलाए जा रहे वन मित्र अभियान अंतर्गत वन रेंज टंडनवन में विधायक बारा डॉ वाचस्पति एवं वन रेंज अधिकारी शंकरगढ़ अजय कुमार ने पौधरोपण कर लोगों से अधिक से अधिक संख्या में पौध रोपण करने का आवाह्न किया। साथ ही वन रेंज अधिकारी अजय कुमार ने लोगों को प्रकृति से लगाव एवं जागरूकता संदेश देते हुए कहा कि भावी पीढ़ी को सुरक्षित वातावरण देना है तो हमें वृक्ष जरूर लगाना चाहिए। आज की प्रदूषण भरी जिंदगी से बचना है तो हर नागरिक को एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि राजकुमार पटेल, अर्पित जायसवाल, संदीप पटेल, विजय कुमार निषाद, अशोक कुशवाहा, एसीएफ जमुनापार संगीता यादव, वन दरोगा राजा चौहान, संजय मौर्या, आकाश मौर्य, जितेन्द्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक स्व. रमाकांत मिश्र की 91वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई

पूर्व सांसद की नेतृत्व में हर घर तिरंगा यात्रा का किया गया आह्वान

करछना। यमुनापार के विकासखंड कौंधियारा के अंतर्गत ब्लॉक सभागार में पूर्व विधायक स्व. रमाकांत मिश्र की 91वीं जयंती मंगलवार को धूमधाम से मनायी गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि बारा क्षेत्र के लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने तथा सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए वह जीवनपर्यंत संघर्षरत रहे।बारा विधायक डॉ वाचस्पति ने पूर्व विधायक के शैक्षिक उन्नयन हेतु किये गए प्रयासों पर प्रकाश डाला। विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद ने रमाकांत मिश्र को विकास पुरुष की संज्ञा दी। अध्यक्ष ब्लॉक प्रमुख संघ प्रयागराज एवं राजेन्द्र कुमार मिश्र बबुआन ने विधायक जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। दोनों लोगों ने ही उनके राजनीतिक जीवन, कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके पदचिह्नों पर चलने का आह्वान किया।कार्यक्रम का संचालन डॉ मणिशंकर द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर ब्लॉक प्रमुख करछना कमलेश द्विवेदी, ,खंड विकास अधिकारी चंदन देव पाण्डेय,नागेन्द्र पाण्डेय,रामानन्द त्रिपाठी ,पूर्व प्रमुख अन्नू मिश्र, अनिलेश मिश्र, दिनेश त्रिपाठी, अनुज पाण्डेय, प्रभाकांत त्रिपाठी,अमित पाण्डेय, कृष्णानंद शुक्ला,मनोज कुशवाहा, समर बहादुर सिंह आदि उपस्थित रहे। इसके पूर्व आए हुए अतिथियों ने पूर्व विधायक को श्रद्धासुमन अर्पित किया। इसके बाद खंड विकास अधिकारी कार्यालय में पूर्व सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी ,विधायक बारा वाचस्पति, विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद, प्रमुख करछना कमलेश द्विवेदी,प्रमुख कौंधियारा इंद्रनाथ मिश्र के साथ खंड विकास अधिकारी चंदन देव पांडेय के नेतृत्व में खंड विकास अधिकारी कार्यालय के समस्त अधिकारी , कर्मचारियों के साथ भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेंद्र मिश्र उर्फ 'बबुआन', चंद्र प्रकाश त्रिपाठी एवं सैकड़ो की संख्या में उपस्थित क्षेत्रीय लोगो के साथ आजादी के 75 वें वर्ष के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री के आवाहन पर हर घर तिरंगा झंडा फहराने के लिए लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जागृत करने और भारत के राष्ट्रीय झंडे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए रैली निकालकर लोगों को अपने-अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज लगाने के लिए जागरूक किया।

निपुण भारत मिशन के तहत शिक्षकों को दी जा रही चार दिवसीय ट्रेनिंग

सोरांव। प्राथमिक विद्यालय में बच्चों की संख्या में इजाफा और उनकी पढ़ाई को रुचिकर बनाने के लिए एआरपी द्वारा प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक व शिक्षा मित्रों को चार दिवसीय ट्रेनिंग दी जा रही है, जिसकी शुरूआत मंगलवार से बीआरसी परिसर में की गई। बच्चों की शिक्षा में रुचि बढ़े इसके लिए अध्यापक व अध्यापिकाओं को नए तरीके से पढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए कई प्रकार की तकनीक की जानकारी एआरपी द्वारा शिक्षक को दी जा रही है। ट्रेनिंग में 50 शिक्षकों का दो बैच प्रतिदिन चलाया जा रहा है। शिक्षक व शिक्षामित्र कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों को नई तकनीक जैसे खेल खेल में पढ़ाना आदि विधि अपनाएंगे। एआरपी शशि कांत मिश्रा व पंकज त्रिपाठी इन शिक्षकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। खंड शिक्षा अधिकारी ने बताया कि प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को उनके रुचि के हिसाब से पढ़ाने की तैयारी की जा रही है। जिससे प्राथमिक विद्यालय के बच्चे भी पढ़ लिखकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके।

शिक्षण संस्था छात्रवृत्ति हेतु मास्टर डाटा बेस में सम्मिलित होने सम्बन्धी पूर्ण कार्यवाही 20 अगस्त के अन्दर करना सुनिश्चित करें

प्रयागराज। वित्तीय वर्ष/शैक्षिक सत्र 2024-25 में अन्य पिछड़े वर्ग (अल्पसंख्यक पिछड़े वर्ग को छोड़कर) के पूर्वदशम/दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति योजनान्तर्गत शिक्षण संस्थाओं द्वारा छात्रवृत्ति हेतु मास्टर डाटाबेस में सम्मिलित होने की अन्तिम तिथि शासन द्वारा दिनांक 20 अगस्त, 2024 निर्धारित की गयी है। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी कोमिल द्विवेदी ने जनपद में अवस्थित समस्त शिक्षण संस्थाओं को छात्रवृत्ति हेतु मास्टर डाटा बेस में सम्मिलित होने सम्बन्धी पूर्ण कार्यवाही दिनांक 20 अगस्त, 2024 के अन्दर सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा है। यदि शासन द्वारा उपरोक्त निर्धारित समय सीमा के अन्दर शिक्षण संस्था द्वारा छात्रवृत्ति हेतु मास्टर डाटा नहीं भरा जाता है और पात्र छात्र/छात्रा छात्रवृत्ति/शुल्क प्रतिपूर्ति से वंचित होते है तो उसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी सम्बन्धित शिक्षण संस्था की होगी।

घर में घुस कर मार पीट व जानलेवा हमला किया गया, मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके के एक गांव पुरानी रंजिश को लेकर घर में घुस कर मारा पीटा गया और जानलेवा हमला किया गया। तीन नामजद तथा एक दर्जन अज्ञातों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय रजौत घीनपुर निवासी कमला प्रसाद मिश्रा पुत्र राम जी मिश्रा का कहना है कि वह आर एस एस के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।उनका आरोप है कि उनके घर में घुस कर उन्हें मारा पीटा गया और जान जानलेवा हमला किया गया। कमला प्रसाद मिश्रा ने मऊआइमा थाने में मोहम्मद फैजान, मोहम्मद साबिर, फिरोज आलम को नामजद करते हुए एक दर्जन अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। कमला प्रसाद मिश्रा का आरोप है कि इसके पूर्व भी उनके पुत्र को मारा पीटा गया था और वीडीयो बना कर सोसल मीडिया पर वायरल कर दिया गया था।

मऊआइमा के बनिया तालाब पर आयोजित हुआ बुढवा मंगल का मेला

मऊआइमा। हर वर्षों की भांति इस वर्ष भी मऊआइमा के बनिया तालाब पर बुढवा मंगल का मेले का आयोजन किया गया।इस अवसर पर हनुमानजी की झांकियां गाजे बाजे के साथ निकाली गई।तथा खेल कूद तैराकी कबड्डी आदि का प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मेले का संचालन राम लीला कमेटी के मुदित खत्री, अशोक साहू, अध्यक्ष सचिन साहू,तथा मेले के प्रबंधक डाक्टर नन्दलाल मौर्या,संजय साहू, राजेश गुप्ता, दिलीप केसरवानी,बनारसी साहू आदि लोग मौजूद रहे। उक्त जानकारी नगर पंचायत सदस्य रवि गुप्ता ने दी।

मुख्यमंत्री द्वारा लखनऊ में आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम का कलेक्ट्रेट संगम सभागार में किया गया सजीव प्रसारण

अखंड भारत संदेश

सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल ने जनप्रतिनिधियों के साथ जनपद के लिए नवचयनित 20 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान कर दी शुभकामनाएं

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा मंगलवार को लोक भवन सभागार, लखनऊ में उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के अन्तर्गत सहायक शोध अधिकारी (सांख्यिकी), सहायक सांख्यिकीय अधिकारी, कनिष्ठ सहायक, लेखा लिपिक, मण्डी पर्यवेक्षक श्रेणी-2, मण्डी निरीक्षक, नक्शा नवीस/ मानचित्रक एवं मानचित्रकार के पद पर कुल चयनित 1036 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र का वितरण किया गया। मुख्यमंत्री जी के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण प्रयागराज कलेक्ट्रेट स्थित संगम सभागार में किया गया। संगम सभागार में आयोजित कार्यक्रम में सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल द्वारा विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद, विधान परिषद सदस्य सुरेन्द्र चौधरी व जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल के साथ जनपद हेतु चयनित 20 सहायक शोध अधिकारियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर सांसद फूलपुर प्रवीण पटेल ने अपने सम्बोधन में कहा कि किसी भी परिवार की यह इच्छा होती है कि उनका बेटा-बेटी पढ़-लिखकर आगे बढे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश में शिक्षा, स्वास्थ्य सहित हर क्षेत्र में तेजी के साथ विकास हुआ है, विशेष रूप से स्वास्थ्य विभाग में बहुत तेजी से परिवर्तन हुआ है। आज प्रदेश के अस्पतालों, सीएचसी/पीएचसी में बहुत अच्छी व्यवस्थायें उपलब्ध है। प्रदेश सरकार सुविधाओं को और बढ़ाने के लिए लगातार कार्यरत है। उन्होंने कहा कि आज आप लोगो को स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने का मौका मिला हैं। आप लोग पूरी ईमानदारी, मेहनत व लगन के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, जिससे आमजनता को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने सभी नवचयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद मौर्या ने नवचयनित सहायक शोध अधिकारियों को चयनित होने की शुभकामनाएं देते हुए उन्हें अपने कर्तव्यबोध से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि लोगो को स्वस्थ बनाये रखने का कार्य स्वास्थ्य विभाग करता है, इसलिए आपके ऊपर लोगो का स्वास्थ्य बनाये रखने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। मैं आशा करता हूं कि आप सभी लोग अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए लोगो को स्वस्थ बनाये रखने के लिए पूरी तनमयता के साथ कार्य करेंगे। इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य सुरेन्द्र चौधरी ने नवचयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की और कहा कि मैं आपसे अपेक्षा करता हूं कि आप जिस कार्य के लिए नियुक्त हुए है, उसमें आप अपना पूरे मनोयोग से योगदान देंगे। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. आशु पाण्डेय द्वारा नवचयनित अभ्यर्थियों को उनके कार्य, उत्तरदायित्व एवं उसके महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी श्री गौरव कुमार सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारीगणों के अलावा चयनित अभ्यर्थीगण उपस्थित रहे।

गंगा नहाने गए जुड़वा भाई डूबे एक की मौत

अखंड भारत संदेश

झूंसी। स्थानी थाना क्षेत्र के सोहम आश्रम के पास दोस्तो संग गंगा नहाने गए जुड़वा भाई गंगा में डूबे एक को तो नाविकों ने बचा लिया जब कि दूसरे की डूबने से मौत हो गई। सूचना पर पहुची पुलिस ने गोताखोरों की मदद से घंटो मसक्कत के बाद डूबे हुए युवक का शव बरामद कर पीएम के लिए भेज दिया। जब कि दूसरे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया गया। हवेलिया निवासी कृष्ण देव पांडे के बेटे सत्रह वर्षीय ऋषभ पांडे व रिशांत जुड़वा थे। दोनो इंटर के छात्र थे। मंगलवार की दोपहर दोनो अपने दोस्त रवि के साथ हवेलिया सोहम आश्रम के पास गंगा नहाने गए थे। तीनों उफनाई गंगा में मौज मस्ती कर रहे थे जिसका वीडियो भी बनाया है नहाने के दौरान अचानक दोनों जुड़वा भाई डूबने लगे साथ में गए रवि ने शोर मचाया तो मछली मार रहे एक नाविक ने किसी तरह ऋषभ को तो बचा लिया लेकिन रिशांत गहरे पानी में डूब गया सूचना पर परिजन भी रोये बिलखते घाट पर पहुंच गए। स्थानीय लोगों ने घंटो रिशांत की गहरे पानी में तलाश की पर उसका कहीं अता पता नहीं चला तभी सूचना पर चौकी इंचार्ज छतनार कपिल कुमार गोताखोरों के साथ पहुंचे इसके बाद रिशांत के शव को बाहर निकाला जा सका। रिशांत की मौत से घर में कोहराम मचा हुआ है मां ममता पांडे का रो-रो कर बुरा हाल है। तीन भाइयो में रिशांत सबसे छोटा होने की वजह से घर में उसको लोग अधिक लाड प्यार करते थे।

मण्डलायुक्त की अध्यक्षा में हुई प्रयागराज मेला प्राधिकरण की 19वीं बोर्ड की बैठक

अखंड भारत संदेश

बैठक में आगामी महाकुंभ के दृष्टिगत लिये गये महत्वपूर्ण निर्णय

प्रयागराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में प्रयागराज मेला प्राधिकरण की 19 बोर्ड बैठक प्राधिकरण कार्यालय स्थित आई ट्रिपल सी सभागार में संपन्न हुई जिसमें आगामी महाकुंभ के दृष्टिगत कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।सर्वप्रथम महाकुंभ मेला 2025 की बसावट, व्यावसायिक एवं आवासीय गतिविधियों के अनुश्रवण एवं श्रद्धालुओं/ पर्यटकों को अवस्थापनाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ मेला क्षेत्र, यातायात एवं पार्किंग के अधिकांश भाग को नियंत्रित किए जाने के दृष्टिगत बोर्ड ने मेलाधिकारी की अध्यक्षता में समिति बनाने को अनुमोदन दिया। यह समिति मेला क्षेत्र के सीमा निर्धारण का प्रस्ताव तैयार करते हुए मेला जनपद घोषित किए जाने हेतु विस्तृत प्रस्ताव अग्रेतर कार्यवाही हेतु प्रेषित करेगी।इसी क्रम में महाकुंभ 2025 में संस्थाओं को सॉफ्टवेर के माध्यम से भूमि और सुविधाओं के आवेदन एवं आवंटन हेतु प्रेषित प्रस्ताव को भी अनुमोदन मिला। अब सभी संस्थाएं भूमि एवं सुविधाओं हेतु ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगी। इसके पश्चात सुविधा पर्ची उपलब्ध कराने से लेकर पर्ची इश्यू होने के पश्चात यदि कॉन्ट्रैक्टर ने समय से समान उपलब्ध नहीं कराया तो उस पर नकेल कसना आसान होगा। इस सॉफ्टवेयर पर महाकुंभ 2013 और कुंभ 2019 के संस्थाओं के आवंटन (सुविधा पर्चियों) का सभी पिछला डेटा भी उपलब्ध होगा। साथ ही महाकुंभ 2025 के लिए नई संस्थाओं के पंजीकरण और आवेदन की सुविधा तथा सुविधाओं की स्थापना के फोटोग्राफिक साक्ष्य और सत्यपन के मॉड्यूल भी उपलब्ध रहेगें। मेला क्षेत्र में आने वाले तीर्थयात्रियों, स्नानार्थियों एवं पर्यटकों के आवागमन को सुचारू व सुरक्षित बनाने तथा बेहतर अनुभूति हेतु मेला क्षेत्र के सन्निकट अत्यधिक महत्वपूर्ण पाँच मार्गों के विकास एवं सौन्दर्यकरण का कार्य मेला प्राधिकरण द्वारा कराये जाने के प्रस्ताव को भी अनुमोदन मिला। इन पांच प्रमुख मार्गों पर सिविल कार्यों के साथ-साथ, हॉटिकल्चर, म्यूरल पेंटिंग तथा मेंटेनेंस का कार्य भी कराया जाएगा। यह पाँच मार्ग हैं- बख्शी बांध से गंगा मूर्ति तिराहे होते हुए नागवासुकी तक, अलोपी बाग से दारागंज तक, किलाघाट मार्ग, दारागंज से शास्त्रीपुल तथा टिकर माफी आश्रम काली त्रिवेणी रैंप ।महाकुंभ 2025 के अवसर पर टूर गाइड, नाविक, वॉलंटियर्स, कुंभ सेवामित्र, वेंडर्स, मेला क्षेत्र में तैनात किए जाने वाले पुलिसकर्मी एवं विभागीय अधिकारी/ कर्मचारियों (लगभग 10000 की संख्या) के 2 से 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव तथा महाकुंभ के दौरान मेला क्षेत्र में आयोजित होने वाली अन्य विविध गतिविधियों को संचालित करने हेतु हाई स्पीड इंटरनेट (लीज लाइन) उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को भी अनुमोदन मिला। इसके अतिरिक्त त्रिवेणी बांध रोड पर मोरी गेट पंपिंग स्टेशन के पास नई रेलवे लाइन के अंडरपास मार्ग के निर्माण कार्य को भी अनुमोदन मिला।

जबरन धर्म परिवर्तन करने पर हाईकोर्ट सख्त

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि संविधान प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म को मानने और प्रचार करने का मौलिक अधिकार देता है। धर्म की स्वतंत्रता के व्यक्तिगत अधिकार को धर्मांतरण करने के अधिकार के रूप में नहीं बदल सकते। न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की पीठ ने यह टिप्पणी कर जबरन धर्म परिवर्तन कराने और यौन शोषण के आरोपी अजीम को जमानत देने से इन्कार कर दिया।बदायूं के थाना कोतवाली में अजीम पर युवती का जबरन धर्म परिवर्तन कराने व उसका यौन शोषण करने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया है। आरोपी ने जमानत के लिए हाईकोर्ट से गुहार लगाई है। वकील ने दलील दी कि आवेदक को झूठा फंसाया गया हैपीड़िता ने संबंधित मामले में अपने बयान में आवेदक से शादी की पुष्टि की है। वहीं, अपर शासकीय अधिवक्ता ने जमानत का विरोध करते हुए पीड़िता के सूचना देने वाले के बयान का हवाला दिया, जिसमें इस्लाम में धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डालने का आरोप लगाया गया था।कोर्ट ने तथ्यों का अवलोकन कर कहा कि सूचना देने वाले ने धारा 164 सीआरपीसी के तहत दर्ज अपने बयान में स्पष्ट रूप से कहा था कि आवेदक और उसके परिवार के सदस्य उसे मजबूर कर रहे थे। कोर्ट ने आवेदक की जमानत अर्जी खारिज कर दी।

कोर्ट के आदेश पर ढाई साल बाद युवक की हत्या का दर्ज किया गया मुकदमा

परिजनों का आरोप प्रापर्टी हड़पने के लिए आरोपियों ने हत्या कर रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया था शव

अखंड भारत संदेश

झूंसी। प्रापर्टी हड़पने के लिए तकरीबन ढाई साल पहले युवक की हत्या उसके शव को रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया गया था। अब तकरीबन ढाई साल बाद अब कोर्ट के आदेश के खिलाफ आरोपियों पर हत्या की धारा समेत अन्य संगीन धाराओं में केस दिया गया है। अभी किसी भी आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। पुलिस ने उनकी तलाश में जुट गई है। थाना क्षेत्र के उस्तापुर-महमूदाबाद गांव निवासी विमला देवी पत्नी भुलईराम निषाद का आरोप है कि पुरानी रंजिश और प्रापर्टी हड़पने के लिउ उनके बिरोधियों ने उनके बेटे सुजीत कुमार की हत्या तकरीबन ढाई साल पहले हत्या कर शव को रेलवे ट्रैक पर फेंक दिया गया। मृतक सुजीत कुमार के दो मोबाइल फोन गायब भी कर दिया गया। आरपीएफ रामबाग की ओर से शव को कब्जे में लेकर पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम को भेज दिया गया। पर परिजन पुलिसिया कार्रवाई से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच के लिए कोर्ट में अर्जी दी। कोर्ट ने पूरे मामले में विधि सम्मत धाराओ में मुकदमा पंजीकृत कर नियमानुसार विवेचना करना का आदेश दिया। तब जाकर तकरीबन ढाई साल बाद मंगलवार को आरोपी नंदलाल उर्फ नन्दा, दुर्गेश निषाद,राहुल निषाद निवासी एकलव्य नगर, करेलाबाग थाना करैली, राजीव प्रजापति, विक्रमा जीत निषाद उर्फ गोपाल, उमेश निषाद निवासी करैलाबाग, थाना करेली, कमलेश श्रीवास्तव उर्फ मास्टर, निवासी नरायनपुर थाना करैली, राजेंद्र चौरसिया एवं चार पांच अज्ञात के खिलाफ हत्या समेत कई संगीन धाराओं में केस दर्ज किया गया है। एसओ उपेंद्र प्रताप सिंह का कहना है कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

सम्पूर्ण समाधान दिवस पर हुई सम्भव सुनवाई

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज, चन्द्रमोहन गर्ग द्वारा तथा अपर नगर आयुक्त दीपेन्द्र यादव द्वारा आज दिनांक 13 अगस्त 2024 को जन सुनवाई करते हुए नगर निगम में आये हुए फरियादियों की शिकायतों को सुना गया, जिसमें कुल 27 शिकायतें प्राप्त हुई। जनशिकायतों के अविलम्ब गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण कराये जाने हेतु नगर आयुक्त द्वारा सम्बन्धित अधिकरियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये, और यह भी निर्देशित किया गया कि गुणवत्ता पूर्ण शिकायतों का निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलिता न बरती जाय। सम्भव जन सुनवाई बैठक के दौरान अपर नगर आयुक्त दीपेन्द्र यादव तथा अरविन्द राय, मुख्य कर निर्धारण अधिकरी पी0 के0 द्विवेदी, पर्यावरण अभियन्ता उत्तम वर्मा, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा0 अभिषेक सिंह, पशुधन अधिकारी डा0 विजय अमृत राज तथा मुख्य अभियन्ता विद्युत संजय कटियार, मुख्य अभियन्ता सतीश कुमार, जलकल महाप्रबंधक गौरव कुमार, लेखाधिकारी अक्षय कुमार समस्त जोनल अधिकारी, अधिशाषी अभियन्ता निर्माण तथा विद्युत, सचिव नगर आयुक्त तथा नगर निगम के अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें।

एसआरएन हॉस्पिटल में डॉक्टरों की हड़ताल

स्ट्रेचर पर ही लेटे रहे मरीज, नहीं बना पर्चा, तस्वीरों में देखिए मरीजों का दर्द

प्रयागराज। कोलकाता में लेडी डॉक्टर के साथ रेप और फिर हत्या के बाद मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट डॉक्टर हड़ताल पर चले गए हैं। प्रयागराज के स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल में भी रेजिडेंट डॉक्टर ओपीडी छोड़कर बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं। कल सोमवार को मरीजों को जानकारी न होने के कारण सुबह ही अस्पताल पहुंच गए, जल्दी आने वाले कुछ मरीजों का पर्चा तो बन गया लेकिन वह भी डॉक्टर को नहीं दिखा सके। एक तरफ जहां डॉक्टर बाहर प्रदर्शन और नारेबाजी कर रहे तो दूसरी ओर अंदर उनकी ओपीडी के बाहर मरीज दर्द से कराहते मिले। आज दूसरे दिन मंगलवार को भी डॉक्टर हड़ताल पर हैं। डॉक्टरों की मांग है कि सरकार उनकी सुरक्षा के लिए कड़े कानून लाए और कोलकाता में लेडी डॉक्टर के साथ हुई घटना की सीबीआई जांच कराई जाए। जूनियर डॉक्टर एसोसिएशन के प्रेसीडेंट डॉ. सचिन कुमार ने बताया कि मंगलवार को भी हड़ताल जारी रहेगा। लेकिन इमरजेंसी सेवाएं जारी रहेंगी।

सपा विधायक रहे स्व. जवाहर यादव पंडित की 28वीं पुण्यतिथि पर किया गया नमन

प्रयागराज। समाजवादी पार्टी के नेता, झूंसी क्षेत्र से विधायक रहे स्व. जवाहर यादव उर्फ पंडित की 28 वीं पुण्यतिथि पर आज सपा नेताओं, कार्यकताओं ने शहर के अशोक नगर मोहल्ले में स्थित उनके आवास पर पहुँच कर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए नमन किया। स्व. पंडित वर्ष 1991में पहली बार झूंसी विधानसभा से चुनाव लड़े मगर कम वोटों से हार गए थे 1993 के चुनाव में झूंसी से विधायक चुने गए थे। श्रद्धांजलि के मौके पर प्रमुख रूप से विधायक श्रीमती विजमा यादव, सपा जिलाध्यक्ष गंगापार अनिल यादव, विधायक संदीप पटेल, पूर्व विधायक गण अंसार अहमद, बासुदेव यादव, मुजतबा सिद्दीकी, पंधारी यादव, अमरनाथ सिंह मौर्य,कृष्ण मूर्ति यादव,शिव भान सिंह यादव,ब्लाक प्रमुख श्रीमती सीमा यादव, राम मिलन यादव, दान बहादुर मधुर, आर एन यादव,जगदीश यादव, त्रिभुवन यादव, बच्चा यादव, कुलदीप यादव, सुभाष यादव, खिन्नी लाल पासी,अम्बिका यादव, भारत यादव आदि सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

तीन सदस्यों की नैक टीम ने महाविद्यालय का किया दौरा

प्रयागराज। चौधरी महादेव प्रसाद डिग्री कॉलेज, प्रयागराज में नैक के तृतीय चक्र के निरीक्षण के दूसरे दिन दिनांक 13 अगस्त 2024 को तीन सदस्यों की नैक टीम ने महाविद्यालय का दौरा किया। नैक टीम के अंतर्गत प्रोफेसर अविनाश तिवारी, कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में प्रोफेसर एन. सेंथिल कुमार, अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई एवं प्रोफेसर संजोय रॉय, अगरतला द्वारा निरीक्षण कार्य किया गया। इस दौरान नैक की टीम ने महाविद्यालय के तीनों परिसर में स्थित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं के निरीक्षण के साथ- साथ आईक्यूएसी, एनसीसी, एनएसएस, आरोग्यम, सीएमपी लाइव पोर्टल, बोटेनिकल गार्डन आदि का गहन निरीक्षण किया। समापन बैठक में नैक टीम ने महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ निरीक्षण के दौरान प्राप्त अनुभव साझा किये एवं सुझाव भी प्रदान किये। टीम के अध्यक्ष प्रोफेसर अविनाश तिवारी, कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरु-शिष्य परंपरा बहुत आवश्यक है। यह परंपरा हमें प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है। साथ ही कहा कि बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती है। इस अवसर पर नैक समन्वयक प्रोफेसर बबीता अग्रवाल, सह समन्वयक डॉ गोविंद गौरव, महाविद्यालय उप प्राचार्या प्रोफेसर नीता सिन्हा,आईक्यूएसी सदस्य डॉ प्रिया सोनी खरे, डॉ जितेन्द्र कुमार, डॉ संगीता, डॉ अतुल भारद्वाज, डॉ श्वेताभ, डॉ अवधेश तिवारी सहित प्रोफेसर सत्यंवदा सिंह, प्रोफेसर रजत श्रीवास्तव, प्रोफेसर संजय सिंह, प्रोफेसर एस पी सिंह, डॉ रुचिका वर्मा, डॉ ज्ञान प्रकाश आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ रितु रघुवंशी ने किया।

उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय सूबेदारगंज में हर घर तिरंगा अभियान के तहत महाप्रबंधक और अधिकारियों ने ली सेल्फी

प्रयागराज। मंगलवार को उत्तर मध्य रेलवे, मुख्यालय सूबेदारगंज में महाप्रबंधक श्री उपेंद्र चंद्र जोशी ने सेल्फी खिंचवाकर हर घर तिरंगा अभियान में सहभाग के लिए रेल कर्मियों और उनके परिवारजनों को प्रोत्साहित किया। इस सेल्फी कार्यक्रम में उत्तर मध्य रेलवे के प्रमुख विभागाध्यक्ष और अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । इस अवसर पर महाप्रबंधक महोदय ने कहा कि, झंडे के साथ हमारा संबंध सदैव व्यक्तिगत की बजाए औपचारिक और संस्थागत रूप में अधिक रहा है। एक राष्ट्र के रूप में झंडे को सामूहिक रूप से घर पर लाना न केवल तिरंगे के साथ हमारे व्यक्तिगत संबंध का प्रतीक है बल्कि यह राष्ट्रम निर्माण में हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। यह पहल लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जागृत करने और भारत के राष्ट्रीय झंडे के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए की गई है। ज्ञात हो कि, "हर घर तिरंगा" अभियान का तीसरा संस्करण 9 से 15 अगस्त, 2024 तक स्वतंत्रता दिवस समारोह के हिस्से के रूप में मनाया जा रहा है । यह वर्ष 2022 में आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर शुरू किया गया और इस पहल का उद्देश्य प्रत्येक भारतीय को राष्ट्रीय ध्वज, तिरंगा फहराने के लिए प्रोत्साहित करके नागरिकों में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना है। सभी रेल कर्मचारी भी अपने घरों में तिरंगा फहराने और झंडे के साथ एक सेल्फी क्लिक कर इसे संबंधित पोर्टल पर अपलोड कर रहे हैं।

श्रमिक कॉलोनी जलकर बढ़ाने के खिलाफ में ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

अधिशासी अभियंता ने दिया कार्रवाई का आश्वासन

नैनी। नैनी श्रमिक बस्ती के निवासियों को अचानक पानी का दुगना बिल भेजे जाने के कारण लोग अचंभे में है। इस बारे में श्रमिक बस्ती समिति के द्वारा जल संस्थान जोन संख्या पांच नैनी के अवर अभियंता को ज्ञापन दिए जाने पर उन्होंने कार्रवाई का आश्वासन दिया है। श्रमिक बस्ती समिति के अध्यक्ष मोहम्मद शाहिद के नेतृत्व में जल संस्थान में तैनात अवर अभियंता को ज्ञापन देकर बताया गया कि कॉलोनी के एक कमरे का पहले प्रतिवर्ष 760 रुपए बिल आता था। अब अचानक से 1393 ? आने लगा है। बिल में अचानक हुई दोगुनी बढ़ोतरी के कारण श्रमिक बस्ती के निवासी आश्चर्यचकित हैं और लोगों ने बिल को फिर से संशोधित करते हुए पूर्ववत किए जाने की मांग की है। अवर अभियंता ने समिति के पदाधिकारियों को बताया कि अचानक बिल में हुई बढ़ोतरी के बारे में वह जल संस्थान के महाप्रबंधक तथा उच्च अधिकारियों को समिति के द्वारा प्रेषित ज्ञापन के संबंध में समस्या से अवगत कराते हुए कार्रवाई का प्रयास करेंगे। समिति के अध्यक्ष मोहम्मद शाहिद ने कहा है कि श्रमिक बस्ती 70 वर्ष पुरानी कॉलोनी है। इसमें किसी भी तरह के नए मूल्यांकन अथवा नये संशोधन की कोई आवश्यकता नहीं है। नए मूल्यांकन को रद्द करते हुए यदि पुरानी दर को यथावत नहीं किया गया तो जल संस्थान कार्यालय पर प्रदर्शन कर-के कार्रवाई की मांग की जाएगी। श्रमिक बस्ती समिति के महासचिव विनय मिश्र ने उक्त जानकारी देते हुए बताया है कि ज्ञापन देने वालों में मो. शाहिद, एसबी सिंह, शिशु त्रिपाठी, भूपेंद्र राय जगबरन सिंह, राघवेंद्र सिंह गवर्नर, अजमत हुसैन, सत्येंद्र यादव, मो.साबिर मो. आकिब आदि लोग उपस्थित रहे।

बच्ची से रेप के आरोपी को उम्रकैद...हाईकोर्ट ने की रद्द

कहा-पूरे साक्ष्य नहीं मिले...न ही कोई गवाह,आजमगढ़ में 4 साल पहले हुई थी वारदात

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सबूत के अभाव में 4 साल की बच्ची से रेप के आरोपी की सजा रद्द कर दी है। आरोपी को आजमगढ़ की लोवर कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई थी। कोर्ट ने कहा-किसी अन्य मामले में वांछित नहीं होने पर अविलंब रिहा किया जाए। यह आदेश न्यायमूर्ति अश्वनी कुमार मिश्र एवं न्यायमूर्ति डॉ गौतम चौधरी की खंडपीठ ने आजमगढ़ के मोहम्मद हामिद की अपील पर दिया। आरोपी करीब 13 साल जेल में रह चुका है। 13 साल जेल में रहने के बाद मिली राहत : मामला आजमगढ़ के मुबारकपुर थाने का है, जहां 2011 में आरोपी ने चार साल की बच्ची से बलात्कार किया था। उस समय पीड़िता के माता-पिता घर पर नहीं थे। 2013 में सेशन कोर्ट ने मोहम्मद हामिद को उम्रकैद और 20 हजार रुपए जुमार्ने की सजा सुनाई थी।आरोपी के अधिवक्ताओं का कहना था कि ट्रायल में सारे गवाह पक्षद्रोही हो गए थे और घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं था। दोषसिद्धि केवल मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर की गई थी। कोर्ट ने कहा-कोई मौखिक गवाही नहीं : सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि अभियोजन का साक्ष्य दशार्ता है कि शिकायतकर्ता घटना के समय घटनास्थल पर मौजूद नहीं था, जिसे उसने एफआईआर और अपनी गवाही में स्वीकार किया है। एफआईआर और गवाही से यह भी स्पष्ट है कि उसकी पत्नी भी घटना के समय मौजूद नहीं थी और बाद में दोनों ही पक्षद्रोही हो गए।अभियोजन का कहना था कि आरोपी को ग्रामीणों ने घटनास्थल के पास पकड़ा था और मेडिकल रिपोर्ट से रेप की घटना साबित की गई थी। हालांकि, कोर्ट ने टिप्पणी की कि कोई भी मौखिक गवाही नहीं है जो आरोपी को पीड़िता के साथ रेप के लिए जोड़ती हो। चिकित्सा साक्ष्य और वैज्ञानिक साक्ष्य में कुछ भी ऐसा नहीं है जो आरोपी को इस अपराध से जोड़ता हो। आरोपी की चिकित्सा जांच भी नहीं की गई थी और रिकॉर्ड पर उसकी कोई चिकित्सा रिपोर्ट नहीं है। कोर्ट ने पाया कि अभियोजन आरोपी की अपराध में संलिप्तता को उचित संदेह से परे साबित करने में विफल रहा है। इस कारण आरोपी को संदेह के लाभ का हकदार माना गया और उसकी अपील स्वीकार कर ली गई।

प्रतापगढ़ संदेश

उद्यान विभाग की योजनाओं का प्रचार प्रसार कर किसानों को करें लाभान्वितः डीएम

औद्यानिक विकास योजनाओं के कार्यक्रमों की हुई समीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कैम्प कार्यालय के सभागार में औद्यानिक विकास योजनाओं के कार्यक्रमों की समीक्षा/अनुमोदन हेतु जनपद स्तरीय कमेटी की बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक में जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के सम्बन्ध में बताया कि जो भी किसान पंजीकृत थे उनका भुगतान कर दिया गया है तथा वर्ष 2024-25 में ड्रिप सिंचाई पद्धति, पोर्टेबल स्प्रिंकलर, माइक्रो स्प्रिंकलर, मिनी स्प्रिंकलर, रेनगन, प्रशिक्षण व एक्सपोजर विजिट के जो लक्ष्य प्राप्त है उस पर कार्यवाही की जा रही है। एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना वर्ष 2024-25 में केला, ड्रैगन फ्रूट, स्ट्राबेरी, करौंदा, बेल, कटहल, आंवला, आम, संकर सब्जी की खेती, मसाला की खेती, पुराने बागो का जीर्णोद्धार, वर्मी कम्पोस्ट, एच0डी0पी0ई0, मौन पालन, पावर टिलर, ट्रैक्टर, पैक हाउस, मखाना की खेती आदि के लक्ष्य प्राप्त हुये जिससे किसानों को लाभान्वित किया जाये। इसी प्रकार प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पी0एम0एफ0एम0ई0) के सम्बन्ध में भी जानकारी दी। जिलाधिकारी ने जिला उद्यान अधिकारी को निर्देशित किया कि समस्त विकास खण्डों में उद्यान विभाग की विभिन्न योजनाओं का प्रचार प्रसार किया जाये जिससे ज्यादा से ज्यादा किसान उद्यान विभाग की योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सके और अपनी आय में वृद्धि कर सके। उन्होने कहा कि किसानों का प्रशिक्षण अलग-अलग स्टेट में भेजकर कराया जाये। बैठक में उपस्थित किसान भाईयों ने अपनी-अपनी समस्याओं को अवगत कराया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा, उप कृषि निदेशक विनोद कुमार यादव, जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी व कृषक बन्धु उपस्थित रहे।

समीक्षा बैठक में बोलते जिलाधिकारी संजीव रंजन।

निर्माण कार्य न रोके जाने पर एसओ मानधाता को डीएम ने लगाई फटकार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने कलेक्टेट्ट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दूर-दराज से आये हुये फरियादियों की शिकायतों को गम्भीरतापूर्वक सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई के दौरान शिकायतकर्ता इन्द्रराज, कल्लू निवासी ग्राम सुमेरपुर ने शिकायत किया कि उसकी जमीन का वाद न्यायालय उपजिलाधिकारी सदर के न्यायालय में विचाराधीन है लेकिन विपक्षी राम लखन द्वारा जबरन निर्माण कार्य किया जा रहा है, निर्माण कार्य को रोकने हेतु प्रार्थना पत्र दिया लेकिन निर्माण कार्य नही रूका, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने एसओ मानधाता से फोन के माध्यम से जानकारी ली तो उनके द्वारा बताया गया कि मुझे कोई जानकारी नही है जिस पर जिलाधिकारी ने एसओ मानधाता को कड़ी फटकार लगायी और निर्देशित किया कि स्थगनादेश का अनुपालन करायें और मौके पर शांति व्यवस्था सुनिश्चित करायें।

शिकायतकर्ता हरिभजन निवासी ग्राम सीधापुर ने शिकायत किया कि प्रार्थी अपनी भूमि पर बराबर कब्जा दखल व काबिज दाखिल रहा है। प्रार्थी अपनी हिस्से की भूमि में धान की रोपाई किया है लेकिन हरिनारायन व रामनारायन ने दबंगई के बल पर मेड़ को क्षतिग्रस्त कर दिया है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी सदर और एसओ मानधाता को निर्देशित किया कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम भेजकर शिकायत का निस्तारण करायें। इसी प्रकार जनसुनवाई के दौरान जिलाधिकारी ने अन्य प्राप्त शिकायतों के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों का निस्तारण यथाशीघ्र किया जाये।

जमीनी विवाद में चले लाठी डण्डे, जांच में जुटी पुलिस

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में हुई मारपीट को लेकर पुलिस जांच में जुटी हुई है।

सांगीपुर थाना के गोपालपुर निवासी सूर्यकांत तिवारी तथा शशिकांत तिवारी के बीच काफी समय से जमीनी विवाद चला आ रहा है। मंगलवार को सूर्यकांत तिवारी ने पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया है कि विवाद को लेकर विपक्षियो ने सांगीपुर स्थित उसके टाइनी बैंक की दुकान का ताला तोडकर अस्सी हजार रूपये उठा ले गये। वहीं दूसरे पक्ष के शशिकांत ने पुलिस को दी गई तहरीर में आरोप लगाया है कि वह मंगलवार को सांगीपुर बाजार मोबाइल बनवाने जा रहा था। एक विद्यालय के सामने आरोपियों ने उसे लाठी डंडे व लोहे की राड से मारापीटा। सांगीपुर एसओ मनीष तिवारी का कहना है कि दोनों पक्षो की तहरीर पर जांच की जा रही है। दोषियों के खिलाफ जांच के आधार पर कडी कार्रवाई की जाएगी।

स्टेट बैंक से श्रीराम तिराहे तक चला अतिक्रमण हटाने का अभियान

नपा कर्मियों ने अतिक्रमण हटाने में वसूले 2700 रुपये

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी/प्रशासक नगर पालिका संजीव रंजन के निर्देश पर 13 अगस्त से 15 अगस्त तक घर-घर तिरंगा अभियान के तहत नगर पालिका बेला शहर की महापुरुषों की मूर्तियों की साफ-सफाई कर आसपास के अतिक्रमण को हटाने का आज से अभियान शुरु किया जिसके तहत चौक-कचहरी रोड पर स्थित भारतीय स्टेट बैंक से लेकर श्रीराम तिराहे तक साफ-सफाई के साथ अतिक्रमण हटाने का कार्य किया गया जिसमें प्लास्टिक का उपयोग करने एवं अतिक्रमण करने वाले दुकानदारों से 2700 रुपया जुर्माना भी वसूला गया।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के खाद्य एवं सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि आज सुबह आठ बजे से ही नगर पालिका की टीम जेसीबी व ट्रैक्टर लेकर साढे दस बजे तक स्टेट बैंक से लेकर श्रीराम तिराहे तक साफ-सफाई व अतिक्रमण हटाने का कार्य करती रही। पंजाबी मार्केट में तो पार्क के चारों तरफ चैकियां बनाकर लोगों द्वारा चाय पान की दुकान चलाई जा रही है जिस पर नगर पालिका के ईओ राकेश कुमार ने इस अतिक्रमण को हटाने और आवागमन सुलभ कराने के निर्देश दिये थे जिसके तहत आज यहां पर भी अस्थायी निर्माण को जेसीबी द्वारा हटा दिया गया है। नगर पालिका के सफाई निरीक्षक का यह भी कहना है कि अतिक्रमण के विरुद्ध यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। आज के इस अभियान में जेई सभापति यादव, राजस्व निरीक्षक लाल बहादुर सिंह व राजेश बिंद, प्रशांत सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, अजीत सरोज व मकन्दूगंज पुलिस चैकी विनय सिंह व पुलिस बल उनके साथ मौजूद रही।

अतिक्रमण करने वालों का चालान काटते नपा कर्मी।

रेता से ओवर लोड ट्रक का पुलिस ने किया चालान

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। कौशाम्बी गंगापुल लेहदरी के रास्ते से नवाबगंज थाना क्षेत्र में धड़ल्ले से ओवर लोड रेता लादकर सड़क पर चलने वाले वाहनों का मंगलवार को खनन अधिकारी व नवाबगंज थाना प्रभारी धीरेन्द्र ठाकुर ने अभियांन चलाया जिसमे रेता लादकर ओवरलोड दो ट्रक व एक ट्रेनर को पकड़ कर चालान किया नवाबगंज पुलिस व खनन अधिकारी की इस कारवाई से ट्रक चालकों मे हड़कंप मच गया कुछ देर के लिए सड़को पर सन्नाटा छा गया। उसके बाद सड़को पर वाहन फर्राटे मारने लगे।

संत एन्थोनी इण्टर कालेज से निकली तिरंगा रैली

हर घर तिरंगा अभियान का हुआ शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संत एंथोनी इंटर कालेज से जनपद स्तरीय तिरंगा रैली निकालकर हर घर तिरंगा अभियान का शुभारम्भ किया गया। तिरंगा रैली को परियोजना निदेशक डीआरडीए/नोडल अधिकारी दयाराम यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली संत एंथोनी इंटर कालेज से निकलकर अंबेडकर चैराहा, राजापाल टंकी चैराहा, ट्रेजरी चैराहा, पीडब्ल्यूडी कार्यालय से होते हुए संत एंथोनी इंटर कालेज प्रतापगढ़ में संपन्न हुई। रैली में विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न स्लोगनों जैसे "तिरंगा हमारी शान है-भारत की पहचान है, हवा में जब लहराये तिरंगा-देशभक्ति का जोश जगाये तिरंगा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा-झण्डा ऊँचा रहे हमारा, आइये मिलकर राष्ट्रभक्ति की अलख जगाये-हर घर तिरंगा हम फहरायें" आदि के माध्यम से लोगों को अपने-अपने घरों पर झण्डा फहराने हेतु प्रेरित किया गया। रैली समापन के अवसर पर परियोजना निदेशक दयाराम यादव ने अपने उद्बोधन में स्वंतत्रता संग्राम के सेनानियों के त्याग और समर्पण के बारे में विस्तार से बताय। प्रधानाचार्य डॉ विंध्याचल सिंह ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में देश के वीर सपूतों ने अपनी कुर्बानी दी और देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपने जान की बाजी लगा दी, वे अंग्रेजी सरकार से डरे नहीं बल्कि हमेशा चुनौती देते रहे है। इसके अतिरिक्त प्रधानाचार्य फादर आनन्द कुमार जॉन, उप प्रधानाचार्य डा0 मो0 अनीस, एआरपी धर्मेन्द्र ओझा आदि ने अपने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात सभी स्टाफ तथा विद्यार्थियों ने नशा मुक्त अभियान के अन्तर्गत प्रतिज्ञा करायी गयी। अन्त में सभी ने राष्ट्रगान कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। इस अवसर पर एडीआईओएस आरपी सरोज, जॉन खुजूर, आशीष तिवारी, ऋषिकेश शुक्ला, राजेश दुबे, रंजन प्रताप, माइकल डिसूजा, प्रसंजीत, प्रभात श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे। इसी तरह हर घर तिरंगा अभियान के दौरान विकास खण्डों में तिरंगा रैली निकाली गयी।

तिरंगा रैली में शामिल संत एंथोनी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य व परियोजना निदेशक।

ग्राम विकास अधिकारी पर महिला प्रधान ने लगाए गंभीर आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी तहसील क्षेत्र के करनपुर खूंजी गांव की ग्राम प्रधान रजिया खातून ने एक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर रही है और ग्राम विकास अधिकारी पर गंभीर आरोप लगाते हुए बताया है कि ग्राम विकास अधिकारी उससे फोन पर बात करने की बात करता है बात न करने पर ग्राम सभा के विकास कार्य के लिए आए हुए पैसे को नहीं निकाल रहा है जिससे ग्राम सभा का विकास नहीं हो पा रहा है। महिला प्रधान ने आरोप लगाया है कि उक्त ग्राम विकास अधिकारी उसे बदतमीजी भी करता है और बोलता है कि हमेशा हमारे साथ ऑनलाइन पर आप जुडी रहो तभी ग्राम विकास के लिए आए हुए पैसे को हम निकलेंगे अगर ऐसा नहीं करती हो तो पैसा नहीं निकालेंगे। ग्राम विकास अधिकारी के रवैया के चलते महिला प्रधान परेशान है। फिलहाल यह वीडियो सोशल मीडिया के कई प्लेटफार्म पर वायरल हो रहा है जो की चर्चा का विषय बना हुआ है।

एआरटीओ ने चलाया चेकिंग अभियान, आठ वाहन सीज, 22 का कटा ई-चालान

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। इलाके में एआरटीओ प्रतापगढ़ ने स्कूली वाहनों का सघन चेकिंग अभियान चलाया। चेकिंग के दौरान मानक के विपरीत संचालित आठ वाहन जहां सीज किए गए वहीं बाइस वाहनों का आनलाइन ई-चालान काटा गया।

बता दें शासन के निर्देश के क्रम में एआरटीओ डॉ दिलीप कुमार गुप्त द्वारा इलाके में सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। ओवरलोड वाहनों के साथ स्कूली वाहनों की चेकिंग की गई। चेकिंग अभियान के दौरान मानक के अनुरूप नहीं होने पर आठ वाहनों को सीज किया गया जबकि बाइस वाहनों का ई-चालान काटा गया। परिवहन विभाग द्वारा चलाए गए सघन चेकिंग अभियान से प्राइवेट वाहन चालकों में हड़कंप मचा रहा।

बता दें एआरटीओ प्रवर्तन डॉ दिलीप कुमार गुप्त ने मंगलवार को पट्टी एवं आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र में वाहन चेकिंग अभियान चलाया। सुबह स्कूलों में चल रहे वाहनों को रोककर चेकिंग की गयी। इस दौरान 22 वाहनों में कागजात पूरे न होने पर उनका चालान किया गया। वहीं 8 गाड़ियों में फिटनेस, बीमा न होने से उन्हें सीज कर दिया है। इस दौरान स्कूलों में चल रहे प्राइवेट वाहन चालकों में हड़कंप मचा रहा। एआरटीओ ने बताया कि स्कूल प्रबंधकों को बगैर फिटनेस, बीमा व जर्जर वाहनों को बच्चों को लाने व ले जाने के लिये प्रयोग न करने के निर्देश दिये गये थे, लेकिन बावजूद इसके बराबर शिकायत आ रही थी। जिसको लेकर चेकिंग अभियान चलाया गया और कार्रवाई की गई है। अगर किसी विद्यालय संचालक को मानक की जानकारी नहीं है तो वह संपर्क कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरे दिन भी अधिवक्ताओं की हड़ताल रही जारी

न्यायिक कार्य से विरत रहे अधिवक्ता

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। अधिवक्ता की पत्नी के ऊपर दर्ज धोखाधड़ी के मुकदमे में विवेचक द्वारा बिना साक्ष्य संकलन के चार्ज शीट भेजे जाने का आरोप लगाते हुए तहसील के अधिवक्ता लामबंद हो गए। आक्रोशित अधिवक्ता तहसील गेट व रजिस्ट्री कार्यालय में तालाबंदी कर न्यायिक कार्य से विरत हो गए।

बता दें पट्टी तहसील क्षेत्र के सरसतपुर गांव के रहने वाले अधिवक्ता रणविजय सिंह की पत्नी ज्योती सिंह ने एक भूमि का बैनामा लिया है। जिस भूमि का बैनामा लिया गया है उस भूमि के दाखिल खारिज होने के बाद खतौनी में भी नाम दर्ज है। आरोप है कि मामले में बैनामेदार की पत्नी द्वारा बैनामेदार के विरुद्ध गलत तरीके से धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज कराया गया है जिसमें विवेचक द्वारा बिना साक्ष्य संकलन के चार्ज शीट भेज दी गई। जबकि पूर्व में रहे अधिकारियों द्वारा यह आश्वासन दिया गया था कि मामले में जांच पड़ताल कर फाइनल रिपोर्ट लगाए जाने की बात कही थी। अब वर्तमान में तैनात अधिकारियों के तबादले के बाद विवेचक द्वारा बिना साक्ष्य संकलन के चार्जशीट भेज दी गई। मामले की जानकारी जब अधिवक्ताओं को हुई तो अधिवक्ताओं ने एकजुट होते हुए तहसील गेट में ताला जड़ दिया और जमकर नारेबाजी की।

मौके पर पहुंचे एसडीएम के वाहन को भी तहसील परिसर में आक्रोशित अधिवक्ताओं ने प्रवेश नहीं होने दिया। आक्रोशित अधिवक्ताओं ने दूसरे दिन भी तालाबंदी कर भेजी गई चार्ज शीट को पुनः दूसरे जांच अधिकारी से विवेचना कराने की मांग की। इस दौरान तहसील के जूनियर बार एसोसिएशन अध्यक्ष दिनेश सिंह, सीनियर अधिवक्ता वंश बहादुर सिंह, अजीत सिंह, बिंदेश्वरी प्रसाद पाठक उर्फ बिंदु, अम्बरीष तिवारी, मनीष तिवारी, आशीष तिवारी, बार महामंत्री अनिल कुमार सिंह, विपिन सिंह, उमेश तिवारी, विकास तिवारी, नंदन चतुर्वेदी, अमरजीत शर्मा, मनोज मिश्रा, शैलेंद्र तिवारी, विवेक पांडेय, मारूफ खान, चंदन सिंह, वाजिद अली, शुभम शांडिल्य, शिव शंकर सिंह समेत तहसील के तमाम अधिवक्ता मौजूद रहे।

तहसील गेट के बाहर तालाबंदी कर नारेबाजी करते अधिवक्ता।

एनसीसी कैडेटों ने निकाली तिरंगा साइकिल रैली

77 कैडेट के साथ चार सैन्य कर्मचारी व एएनओ ने किया प्रतिभाग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। 18 यू0पी0 बटालियन एन.सी.सी. प्रतापगढ़ के तत्वाधान में मंगलवार की सुबह दस बजे स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एक तिरंगा साइकिल रैली का आयोजन किया गया। रैली में कुल 77 कैडेटों जिसमें 25 बालिका एवं 52 बालक कैडेट के साथ चार सैन्य कर्मचारी व दो ए.एन.ओ. ने प्रतिभाग किया।

रैली को बटालियन के कमाण्डिंग आफिसर कर्नल ए.के. सिंह नें झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रैली सदर बाजार स्थित बटालियन कार्यालय से भंगवा की चुंगी, जोगापुर, भुपियामऊ चैराहा, कटरा चैराहा, बडनपुर, विकास भवन, पुलिस लाइन होती हुई पुनः बटालियन कार्यालय में समाप्त हुई। इस रैली में स्थानीय तिलक इण्टर कालेज, राजकीय इण्टर कालेज व पी.बी. इण्टर कालेज के कैडेटों नें उत्साह से भाग लिया। रैली का उद्देश्य आम जनमानस को आगामी स्वतंत्रता दिवस को पूरे जोश, उत्साह एवं भावपूर्ण ढंग से मनानें के लिए प्रेरित करना था। इसी प्रकार की साइकिल रैली का आयोजन बटालियन के अन्तर्गत आने वाले स्कूल/कालेजों द्वारा भी आयोजित की गयी। रैली के समाप्ति के उपरान्त एन.सी.सी. ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज के ग्रुप कमाण्डर ब्रिगेडियर उपेन्द्र सिंह कान्डिल ने कैडेटों को वीडियों कान्फ्रेसिंग के माध्यम से सम्बोधित किया तथा उन्हे शाबाशी दी। इस अवसर पर 18 यू0पी0 बटालियन एन.सी.सी. के कमाण्डिंग आफिसर कर्नल ए.के. सिंह, प्रशासनिक अधिकारी ले0 कर्नल अरविन्द सिंह यादव, सूबेदार मेजर इकबाल सिंह, ए. एन.ओ. कैप्टन राकेश तिवारी, बृजेश कुमार मिश्र सहित कई सैन्य व सिविल कर्मचारी उपस्थित थे।

तिरंगा साइकिल रैली में शामिल एनसीसी कैडेट्स।

छप्पर में सो रहे युवक को पीट कर मोबाइल छीना

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। छप्पर में सो रहे युवक को अज्ञात युवकों ने मारपीट कर मोबाइल छीन लिया। पीड़ित ने मामले की तहरीर पुलिस को देकर कार्रवाई की मांग की है। कोतवाली क्षेत्र के बहुता गांव के रहने वाले रंगोली गुप्ता ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि वह बीती रात अपने घर के समीप स्थित खेत में बने छप्पर में सो रहा था। इसी बीच रात करीब एक बजे के आसपास दो अज्ञात युवक पहुंचे और उसका मुंह दबाकर उसे लात-घूंसे से जमकर मारा पीटा। आरोप है कि इस दौरान उसका कीमती मोबाइल भी उक्त लोगों द्वारा छीन लिया गया। पीड़ित मामले की तहरीर कोतवाली लेकर पहुंचा और अज्ञात के विरुद्ध शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है।कोतवाल आलोक कुमार ने बताया तहरीर मिली है मामले की जांच की जा रही है।

बंद आंगनबाड़ी केंद्रों पर अधिकारी नहीं कर रहे कार्रवाई

कार्यकत्रियां व सहायिकाओं के गायब रहने का है मामला

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। आंगनबाड़ी केंद्रों के बंद होने के बावजूद विभाग कार्रवाई नहीं करना चाह रहा है। अधिकारियों की लापरवाही से कार्यकत्रियां व सहायिकाएं मनमानी पर उतारू है। केंद्रों पर आना या ना आना उनकी मर्जी पर निर्भर करता है।मनमानी की शिकायत के बाद भी अधिकारी कोई कार्रवाई नहीं करते है।

स्थानीय विकास खंड के ग्राम पंचायत अर्जुनपुर में स्थित तीनो आंगनबाड़ी केंद्र पर बीते शुक्रवार को ताला लटक रहा था। ग्रामीणों ने मामले की शिकायत सीडीपीओ से की, लेकिन पांच दिन बीत जाने के बाद न तो कोई कार्रवाई हुई और न ही केंद्रों पर कोई सुधार देखने को मिला। ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत स्थित अर्जुनपुर, लखनसेनपुर और देवापुर केंद्र पर शुक्रवार को ताला बंद होने की सूचना सीडीपीओ को दी थी।

आरोप है कि जानकारी होने के बाद भी कोई कार्रवाई नही हुई। विभागीय लापरवाही के चलते लोग शासन की महत्वाकांक्षी योजना से वंचित हो रहे हैं। यही हाल रहा तो सरकार की जन कल्याणकारी योजना से लोग वंचित हो जायेंगे। केंद्रों पर 0-6 वर्ष तक नौनिहालों के साथ ही गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए उन्हें पोषाहार के साथ छह वर्ष तक के नौनिहालों को अनौपचारिक शिक्षा भी दी जाती है। फिलहाल ग्रामीणों की माने तो आंगनबाड़ी केंद्र कभी-कभार ही खुलते है। जब भी खुलते हैं तो केंद्रों पर कार्यकत्रियां तो कभी-कभार ही आती है, सहायिकाओं के ही सहारे केंद्र की जिम्मेदारी रहती है। ग्रामीणों का कहना है कि मनमानी की शिकायत कई बार की गई, लेकिन कोई सुनता ही नहीं है। इस संबंध में सीडीपीओ से बात की गई तो वह कोई जवाब ही नहीं देना चाहते है। उनका मौन रहना ही केंद्रों पर हो रही मनमानी पर संलिप्तता को बयां करता है।

श्रेणी बी, सी, डी एवं ई वाले योजनाओं इंडीकेटर्स में करे प्रगति सुनिश्चित : जिलाधिकारी

जिलाधिकारी ने सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित योजनाओं/इंडीकेटर्स की प्रगति की समीक्षा कर प्रगति सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी की अध्यक्षता में उदयन सभागार में सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित योजनाओं/इंडीकेटर्स की प्रगति की विस्तृत समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई बैठक में जिलाधिकारी ने विभागवार योजनाओं/इंडीकेटर्स की प्रगति की समीक्षा करते हुए सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि नियमित समीक्षा करते हुए श्रेणी बी, सी, डी एवं ई वाले योजनाओं/ इंडीकेटर्स में प्रगति सुनिश्चित करते हुए श्रेणी ह्लएह्ल में लाया जाय। इसके साथ ही उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत ऋण से सम्बन्धित आवेदनां को बैको से समन्वय कर निस्तारित करायी जाय, अपेक्षित सहयोग न करने वाले बैंक के विरूद्ध शासन को पत्र प्रेषित किया जाय। जिलाधिकारी ने समीक्षा के दौरान सम्बन्धित अधिकारियों को योजना/इंडीकेटर्स-पीएम कुसुम, डे एनआरएलएम बैंक क्रेडिट लिंकेज, डे एनआरएलएम बीसी सखी, नई सड़कों का निर्माण, मध्यान्ह भोजन एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति, अण्डा उत्पादन, प्रोजेक्ट अलंकार, सेतुओं का निर्माण, ओडीओपी वित्त पोषण योजना एवं राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना आदि में प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दियें बैठक में प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी सुखराज बन्धु, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 संजय कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी राम सिंह यादव, परियोजना निदेशक नवीन कुमार गुप्ता एवं जिला अर्थ व संख्याधिकारी अजीत प्रताप सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

करंट लगने से अलग-अलग गांव के दो लोगों की मौत

दोनों दुर्घटनाओं में परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से किया इंकार

कौशाम्बी। करारी कोतवाली क्षेत्र के अलग-अलग गांव में दो लोगों की करंट लगने से मौत हो गई। परिजन कोई कार्रवाई न चाहते हुए शवों का अंतिम संस्कार कर दिया। करारी के पिंडरा सहाबनपुर गांव का मो.आशिक २८ वर्ष पुत्र मो. बसीर की तीन महीने बाद शादी होने वाली थी। नए बने घर में वह बिजली का तार जोड़ रहा था। इस दौरान उसे करंट लग गया। परिजन इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। दूसरी घटना भैला मकदूमपुर की है। यहां की सईद की बेटी मासूमा देवखरपुर में एजाज के साथ ब्याही थी। इस समय वह भैला गांव में थी। मंगलवार को वह कूलर में पानी भर रही थी। इस दौरान कूलर में उतरे करंट की चपेट में आकर तड़पने लगी। परिजन जब तक कुछ समझ पाते उसकी मौत हो गई। दोनों दुर्घटनाओं में परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया। इसके बाद परिजनों ने शवों का अंतिम संस्कार कर दिया।

आंगन में सोई युवती को सांप ने डसा, हालत गंभीर

कौशाम्बी चरवा थाना क्षेत्र के चौराडीह गांव में सोमवार की रात घर के आंगन में जमीन पर सोई युवती को सांप ने डस लिया। जिससे उसकी हालत गंभीर हो गई। आनन - फानन में परिजनों ने उसे प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया है। जानकारी के मुताबिक चौराडीह निवासी राम सुरेमन रैदास मजदूर है। मजदूरी करके परिजनों का भरण पोषण करते हैं। उन्होंने बताया कि सोमवार की रात उनकी 18 वर्षीय बेटी आरती घर के आंगन में जमीन पर बिस्तर डाल कर सोई थी। इस बीच रात्रि में सांप ने उसे काट लिया। जिससे कुछ ही देर में उसकी हालत बिगड़ने लगी। आनन-फानन में परिजनों ने उसे मंझनपुर के एक अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

न्यूज झरोखा

बाइक तिरंगा यात्रा को डीएम ने हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने हर-घर तिरंगा कार्यक्रम के तत्वावधान में पंचायती राज विभाग द्वारा आयोजित बाइक तिरंगा यात्रा को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। बाइक तिरंगा यात्रा कलेक्ट्रेट परिसर से मंझनपुर चौराहा होते हुए ओसा रोड से समदा चौराहा होते हुए डायट मैदान तक आयोजित की गई इस अवसर पर प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी श्री सुखराज बन्धु, परियोजना निदेशक नवीन कुमार गुप्ता एवं जिला पंचायतराज अधिकारी अनिल कुमार सिंह उपस्थित रहें। बाइक तिरंगा यात्रा के माध्यम से जनपदवासियों को 13 अगस्त से 15 अगस्त 2024 तक अपने घर पर तिरंगा फहराने के प्रति जागरूक किया गया। ह्लहर-घर तिरंगाह्व कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक नागरिक के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करते हुए स्वतन्त्रता के प्रतीकों के प्रति सम्मान का भाव उजागर करना है। इसी के दृष्टिगत दिनांक 13 से 15 अगस्त 2024 के मध्य सम्पूर्ण देश में हर-घर तिरंगा अभियान का आयोजन किया जा रहा हैं खण्ड विकास अधिकारियों के नेतृत्व में जनपद के सभी विकास खण्डों में भी तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया।

शहीद स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर सलामी दी गई

महेवाघाट कौशाम्बी। काकोरी ट्रेन एक्शन की 100वीं वर्षगांठ एवं हर घर तिरंगा अभियान के अवसर पर मंगलवार को थानाध्यक्ष महेवाघाट चंद्र भूषण मौर्य द्वारा थाना क्षेत्र अन्तर्गत शहीद स्व0 श्री कामता प्रसाद सरोज निवासी अलवारा के शहीद स्मारक पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर सलामी दी गई, व पुलिस बैंड पार्टी ने झण्डा गीत व राष्टीय गीतों का वादन किया एवं उनकी शहादत को याद किया गया। तत्पश्चात शहीद के परिजन को अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस पावन अवसर पर पुलिस लाइन्स कौशाम्बी/थाने के अधि0/कर्मचारीगण, शहीद हुए कर्मियों के परिवारीजन व आमजनमानस के लोग भी उपस्थित रहे।

बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग ने निकाली तिरंगा यात्रा

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने हर-घर तिरंगा कार्यक्रम के तत्वावधान में बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा आयोजित तिरंगा यात्रा को कलेक्ट्रेट परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। तिरंगा यात्रा कलेक्ट्रेट परिसर से मंझनपुर चौराहा होते हुए विकास खण्ड मंझनपुर तक आयोजित की गई इस अवसर पर प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी सुखराज बन्धु, परियोजना निदेशक नवीन कुमार गुप्ता एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी सुरेश कुमार गुप्ता उपस्थित रहें।

छात्रओं व शिक्षकों को नशा मुक्ति के लिए दिलाई गई शपथ

हर्रायपुर कौशाम्बी एन डी कन्वेंट स्कूल एंड स्वर्गीय श्री समाधि महाराज बाबा सूरजपाल दास इंटर कॉलेज नसीरपुर ,मूरतगंज में भारत को नशा मुक्त बनाने के लिए समस्त छात्रओं व शिक्षकों को नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ दिलाई गई इस मौके पर विद्यालय के प्रबंधक मिथिलेश कुमार सिंह के बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि नशा ऐसा अभिशाप है जिससे पूरा परिवार नष्ट हो जाता है तथा प्रधानाचार्य महेश कुमार ने नशा से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराया । इस मौके पर उप प्रधानाचार्य रामनरेश यादव सुनील सिंह ,अरुण कुमार यादव ,कुलदीप साहू, सत्य प्रकाश यादव ,कलीम अहमद ,राधा रानी, सरोज अग्रवाल ,आकांक्षा पाल ,नंदिता पाल,ममता मिश्रा ,ज्योति सैनी ,आकांक्षा यादव ,आरती श्रीवास्तव , मनीषा विश्वकर्मा रजवंती आदि लोग मौजूद रहे।

सीढ़ी खोलते समय गिरा ठेकेदार दाहिना पैर टूटा

भरवारी कौशाम्बी नगर पालिका परिषद भरवारी अंतर्गत मेहता रोड स्थित श्याम बाबू केसरवानी के मकान में बंधा पाड की सीडी खोलते समय पैर फिसल जाने से ऊपर से ठेकेदार नीचे गिर पड़ा जिससे उसका दाहिना पैर टूट गया। मिली जानकारी के अनुसार नया बाजार निवासी राजीव कुमार वर्मा पुत्र राज कुमार वर्मा ठेकेदार मेहता रोड निवासी श्याम बाबू केशवानी के मकान में निर्माण में काम कर रहे थे जिसका ठेकेदार नया बाजार निवासी राजीव कुमार वर्मा है जो की मकान मैं लगे पाड़ की सीडी को खोल रहा था तभी अचानक उसका पैर फिसल गया जिसके चलाते उसका पैर फिसल वह नीचे गिर पड़ा 'उसको नीचे गिरते देख पास मौजूद कुछ लेवर वा आदमियों ने उसे लाद कर भरवारी स्थित निजी अस्पताल में भर्ती कराया जहा पर चिकित्सकों ने बताया की उसका पैर टूट गया है बैर हाल खतरे से बाहर है उसका उपचार अस्पताल में चल रहा है जिसका ऑपरेशन कल होगा।

डीसीएसआई सर्वे ग्राहक संतुष्टि में रमेश होंडा ने उ प्र पूर्वी जोन में टॉप किया

भरवारी कौशाम्बी। जिले की श्री रमेश होंडा डीसीएसआई सर्वे ग्राहक संतुष्टि में उ प्र पूर्वी जोन में टॉप किया आज लखनऊ में आयोजित होंडा टू व्हीलर्स के फेस्टिवल मीटिंग होटल हिल्टन गार्डन में श्री रमेश होंडा के डीलर श्री रमेश अग्रहरि को ग्राहक संतुष्टि का पुरस्कार होंडा के रीजनल मैनेजर शशांक राजदान एवं राजीव ओबेरॉय ने अपने हाथों से दिया यह जनपद कौशांबी के ऑटोमोबाइल सेक्टर में एक ऐतिहासिक कदम है की जिसमें श्री रमेश होंडा मंझनपुर एवं भरवारी को कंपनी के सर्वे के अनुसार ग्राहक संतुष्टि में सबसे अधिक नंबर प्राप्त हुए उत्तर प्रदेश के पूर्वी जोन के सभी डीलरों में श्री रमेश होंडा को यह पुरस्कार पाने का गौरव प्राप्त हुआ इससे स्पष्ट होता है की श्री रमेश होंडा में जो भी ग्राहक पहुंच रहा है उसको सही सर्विस और सुविधा प्रदान हो रही है। होंडा मोटरसाइकिल स्कूटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड का आज फेस्टिवल मीटिंग लखनऊ के होटल हिल्टन गार्डन में विभूति खंड में संपन्न हुआ जिसमें वर्ष 2024-25 के वित्तीय वर्ष में होंडा को भारतवर्ष के नंबर वन कंपनी बनने का गौरव प्राप्त हुआ सारी सभी टू व्हीलर कंपनियों को पीछे करते हुए होंडा मोटरसाइकिल स्कूटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड विक्रय में भारतवर्ष में एक नंबर पर पहुंच गई।

पुलिस भर्ती परीक्षा निष्पक्ष सुचितापूर्ण एवं सकुशल करायी जाए सम्पन्न : डीएम

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने पुलिस भर्ती परीक्षा-2023 के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ बैठक कर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा उदयन सभागार में पुलिस भर्ती परीक्षा-2023 के सम्बन्ध में सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट, स्टैटिक पुलिस मजिस्ट्रेट, केन्द्र व्यवस्थापक एवं सहायक केन्द्र व्यवस्थापकों के साथ बैठक की गई। बैठक में जिला विद्यालय निरीक्षक सच्चिदानन्द यादव ने बताया कि उ0प0 पुलिस में आरक्षी नागरिक पुलिस के पदों पर सीधी भर्ती-2023 की लिखित परीक्षा दिनांक 23, 24 एवं 25 अगस्त 2024 तथा 30 एवं 31 अगस्त 2024 को दो पालियों (प्रातः 10 बजे से मध्यान्ह 12 बजे तक एवं अपरान्ह 03 बजे से सायं 05 बजे तक) में जनपद में 11 परीक्षा केन्द्रों पर कराया जाना प्रस्तावित हैं। परीक्षा को सुचितापूर्ण, सकुशल एवं शान्तिपूर्ण संपन्न कराये जाने के लिए शासनादेश एवं भर्ती बोर्ड द्वारा जारी दिशा-निदेर्शानुसार सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट, स्टैटिक पुलिस मजिस्ट्रेट, केन्द्र व्यवस्थापक एवं सहायक केन्द्र व्यवस्थापक एवं परीक्षा सहायक की नियुक्ति की गई हैं। परीक्षा में कुल 28240 परीक्षार्थी सम्मिलित होंगे। उन्होंने परीक्षा सुचितापूर्ण संपन्न कराने के सम्बन्ध में केन्द्र व्यवस्थापकों एवं सहायक केन्द्र व्यवस्थापकों को आवश्यक जानकारी दी। जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को परीक्षा सुचितापूर्ण एवं सकुशल संपन्न कराने के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि यह परीक्षा शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है, किसी भी स्तर पर लापरवाही क्षम्य नहीं हैं। उन्होंने सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेट, स्टैटिक पुलिस मजिस्ट्रेट, केन्द्र व्यवस्थापक को आपस में समन्वय बनाकर अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का जिम्मेदारीपूर्वक निर्वहन सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। उन्होंने कहा कि परीक्षा निष्पक्ष, सुचितापूर्ण एवं सकुशल सम्पन्न करायी जाय। भर्ती बोर्ड द्वारा जारी दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने सेक्टर सेक्टर/स्टैटिक मजिस्ट्रेटों को अपने-अपने परीक्षा केन्द्र का भ्रमण कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के भी निर्देश दियें। पुलिस अधीक्षक ने परीक्षा सकुशल संपन्न कराने के सम्बन्ध में सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दियें।बैठक में अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार गोंड, वरिष्ठ कोषाधिकारी रवीन्द्र प्रताप सिंह एवं परियोजना निदेशक नवीन कुमार गुप्ता सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

काकोरी कांड पर आधारित आर्ट एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

भरवारी कौशाम्बी। भरवारी स्थित भवन्स मेहता विद्याश्रम में जूनियर एवं सीनियर छात्रों के बीच आर्ट एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे सभी छात्रों ने प्रतिभाग किया।सभी छात्रों ने प्रतियोगिता में दिए हुए विषय" काकोरी काण्ड" से आधारित चित्रकला का प्रदर्शन किया।प्रतियोगिता के उपरांत शिक्षक सुधाकर सिंह राम सनेही श्रीवास्तव सुशील कुमार श्रीवास्तव नागेंद्र द्विवेदी शैलेश त्रिपाठी एवं रमेश चंद्र शर्मा ने सभी प्रतियोगी पेंटिंग्स में से टॉप 10 बेस्ट पेंटिंग्स को सेलेक्ट करते हुए परिणाम घोषित किया जिसमें श्रेयांश सिंह प्रथम,पुष्पांजलि द्वितीय एवं स्नेहा बघेल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।इसी क्रम में आराध्या शर्मा को चौथी,उज्ज्वल कुमार को पांचवी,रौनक मिश्रा को 6वीं,प्रतीक्षा शुक्ला को 7वीं,प्रतिमा वर्मा को 8वीं,पुष्पेंद्र सिंह को 9वीं एवम दृष्टि केशरवानी को 10वीं रैंक हासिल हुई।प्रधानाचार्य अनिल कुमार मिश्र ने शीर्ष सभी 10 प्रतियोगी छात्रों को पुरस्कार देने की घोषणा करते हुए समस्त छात्रों को बधाई दिया एवं आगामी अन्य प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दिया।

बीपीएस पब्लिक स्कूल गढ़ी में तिरंगा यात्रा का आयोजन

महेवाघाट कौशाम्बी बीपीएस पब्लिक स्कूल गढ़ी रकसौली, पश्चिम शरीरा 13 अगस्त को 15 अगस्त 24 के उपलक्ष्य में "तिरंगा यात्रा" का आयोजन किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने तिरंगा यात्रा का आयोजन बड़े धूमधाम से किया है देश के आजादी के जश्न की याद स्कूल के विद्यार्थियों ने ताजा कर दिया है। इस यात्रा में विद्यालय के निदेशक भानु प्रताप कुशवाहा, प्रबंधक अमित कुशवाहा, उप प्राचार्य जितेन्द्र पाण्डेय, समन्वयक शशांक श्रीवास्तव विवेक कुशवाहा राम प्रसाद, मनोदीप, दीपक, गौरव पांडे और अन्य शिक्षक और सभी कर्मचारी सम्मिलित हुए तिरंगा यात्रा में विद्यालय के सभी विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

भारतीय किसान यूनियन टिकैत ने डीएम को सौपा ज्ञापन

कौशाम्बी। भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट के नेताओं ने मंगलवार को जिलाधिकारी से मुलाकात कर ज्ञापन देते हुए सेंगराहा गांव में विकास कार्यालय में धांधली की जांच सरकारी जमीन पर कब्जा खाली कराए जाने नाली की गंदगी को साफ कराए जाने सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान की मांग की है भारतीय किसान यूनियन टिकैत के जिला उपाध्यक्ष डॉ एके दुबे तथा ब्लॉक अध्यक्ष पुष्पराज सिंह कई कार्यकताओं के साथ मंगलवार को जिला अधिकारी से मिलकर ग्राम सभा सेगरहा में ग्राम प्रधान तथा ग्राम विकास अधिकारी के द्वारा की गई मनमानी पूर्ण कार्यों की तथा घोटाला की जांच की मांग की हैअभिषेक सिंह पुत्र मराज सिंह तथा मनीष सिंह पुत्र बनवारी लाल के द्वारा दिए गए प्रार्थना पत्र पर जिलाधिकारी का ध्यान आकर्षित कराया और नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा टहेरा ग्राम में राकेश सिंह पुष्पराज सिंह के घर के सामने जल भराव तथा बजबजाती हुई नालियों की सफाई के बाबत ज्ञापन सौपा भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट के नेताओं ने जिला अधिकारी से कहा कि जल भराव की समस्या को अगर दूर नहीं किया गया तो गंभीर बीमारियों का सामना लोगों को करना पड़ेगा नवीन परती जमीन गाटा संख्या 3653 जो की 038 50 हैकटेयर जमीन नवीन पड़ती है जिसे 0.308 हेक्टर छेदीलाल पुत्र राजाराम निवासी टहेरा पूरब पश्चिम शरीरा में कब्जा कर रखा है जो उसे खाली कराए जाने की मांग की है कार्यक्रम में डॉ एके दुबे जिला उपाध्यक्ष ब्लॉक अध्यक्ष पुष्पराज सिंह ब्लॉक उपाध्यक्ष राकेश सिंह अभिषेक सिंह तमन कार्यकर्ता मौजूद रहे।

छात्र-छात्राओं नें ग्रहण की विद्यार्थी परिषद की सदस्यता

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के हो रहे सदस्य सदस्यता अभियान के अंतर्गत मंगलवार को सिराथू तहसील के सहजादपुर के रणजीत पंडित इंटर कॉलेज के छात्र छात्राओं ने बड़ी संख्या में विद्यार्थी परिषद की सदस्यता ग्रहण की सदस्यता कर रहे सिराथू तहसील के सहसंयोजक कुलदीप पटेल ने बताया कि पिछले वर्ष की पूरे भारत में छात्र छात्राओं की सदस्यता 5 मिलियन है।विद्यार्थी परिषद प्रत्येक वर्ष छात्र छात्राओं की सदस्यता कराती है ,और इसमें देश भर के विद्यार्थी जुड़ते हैं और राष्ट्रवादी विचारधारा का अनुसरण करते हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि विद्यार्थी परिषद दलगत राजनीति से ऊपर उठकर कार्य करती है छात्र कल का नहीं अपितु आज का नागरिक है जहां-जहां छात्र है वहां वहां विद्यार्थी परिषद है और छात्र शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है। विद्यार्थी परिषद विभिन्न आयाम, गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के विकास के बारे में सोचती है। जैसे कला के विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय कला मंच के माध्यम से उनको बड़े मंच तक ले जाने का कार्य करती है, इस तरह से पर्यावरण में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए स्टूडेंट फॉर डेवलपमेंट(विकासार्थ विद्यार्थी) के माध्यम से जल जंगल जमीन, जन जानवर के हित में कार्य करने के लिए ऐसे विद्यार्थियों के बीच में संगोष्ठी आयोजित करती है। सेवा के क्षेत्र में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को स्टूडेंट फॉर सेवा (सेवार्थ विद्यार्थी) के माध्यम से उनको जोड़कर ऐसे गरीब, असहाय ,पीड़ित व्यक्तियों की सेवा करने हेतु प्रेरणा देती है। इसी को राष्ट्रवाद कहते हैं। छात्र-छात्राओं ने भी इस बात को स्वीकार किया और सैकड़ो की संख्या में विद्यार्थी परिषद की सदस्यता ग्रहण की इस दौरान सिराथू नगर मंत्री नीरज पटेल ,अंकुश पटेल एवं जिला संगठन मंत्री अश्वनी सिंह आदि उपस्थित रहे।

खण्ड शिक्षाधिकारी सरसवां, सिराथू एवं चायल को कारण बताओ नोटिस किये जारी

शासकीय कार्यों में लापरवाही बरतने पर जिला खनन अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा के दौरान मध्यान्ह भोजन एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति में जनपद को डी-श्रेणी की रैकिंग प्राप्त होने (विद्यालयों के पर्यवेक्षण में लापरवाही) पर नाराजगी प्रकट करते हुए खण्ड शिक्षाधिकारी सरसवां, सिराथू एवं चायल को कारण बताओ नोटिस जारी करते हुए 02 दिन के अन्दर कारण स्पष्ट करने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने रामवन गमन मार्ग निर्माण कार्य से सम्बन्धित पत्रावली समय से प्रस्तुत न करने एवं शासकीय कार्यों में लापरवाही बरतने पर जिला खनन अधिकारी को कारण बताओ नोटिस जारी किये हैं।

अध्यक्ष और अधिशासी अधिकारी ने किया हर घर तिरंगा अभियान का शुभारंभ घर-घर दिए राष्ट्रीय ध्वज

अझुवा कौशांबी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा अध्यक्ष शांति देवी कुशवाहा एवं अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने आज मंगलवार हर घर तिरंगा अभियान की वृहद रूप से शुरूआत करते हुए सड़क और गलियों में उतरकर व्यापारियों और आम जनमानस को तिरंगा वितरित करते हुए उनको राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस पर घर-घर तिरंगा फहराने को प्रेरित किया है इस अवसर पर अध्यक्ष और अधिशासी अधिकारी ने सभासदों और नगर पंचायत के कर्मचारियों के साथ आम जनमानस को तिरंगा वितरित कर हर घर तिरंगा फहराने के लिए प्रेरित किया मौके पर पहुंचे भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में राष्ट्रवाद की अलग जगाने के लिए हर घर तिरंगा अभियान चलाया है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देशन के तहत शहरी क्षेत्र में हर घर तिरंगा फहराने के लिए अभूतपूर्व तैयारी की गई है। चेयर मैन शांती देवी कुशवाहा ने कहा इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को देशभक्त और देश प्रेम का संदेश देना है 15 अगस्त को कस्बे में धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा आम जन और व्यापारियों से अपने-अपने घरों में तिरंगा लगने का संदेश दिया जा रहा है अध्यक्ष शांति देवी कुशवाहा ने कहा राष्ट्रीय ध्वज सम्मान के साथ अवश्य फहराएं वह अन्य लोगों को भी राष्ट्रीय ध्वज फहराने हेतु प्रेरित करें साथ ही 15 अगस्त के बाद सम्मान ध्वज को उतार कर रख दें ध्वज को इधर-उधर ना फेंके, राष्ट्रीय ध्वज कहीं रास्ता में पड़ा मिले तो उन्हें ससम्मान उठा लें। अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने मार्केट के व्यापारियों और दुकानदारों को तिरंगा झंडा देते हुए कहा की सभी लोग अपने-अपने घरों में 13अगस्त से 15 अगस्त तक राष्ट्रीय ध्वज फहराए उन्होंने यह संदेश भी दिया ये राष्ट्रीय ध्वज हमारे आन बान और शान का प्रतीक है इसको 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के बाद पूरे सम्मान के साथ झंडा संहिता के अनुसार उतार कर अपने पास सुरक्षित रखें इस मौके पर चेयरमैन प्रतिनिधि ओम प्रकाश कुशवाहा,नगर पंचायत कार्यालय के वरिष्ठ लेखा लिपिक साकेत चंद्र श्रीवास्तव, मनोज गौतम, सत्येंद्र कुशवाहा प्रशांत केसरवानी मिथिलेश केसरवानी फूलचंद के केसरवानी, राजू केसरवानी ,ज्ञानेंद्र स्वर्णकार सभासद शत्रुघन कुमार उर्फ नानका गुप्ता सहित भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता ,नगर पंचायत कर्मी मौजूद रहे हैं।

बांग्लादेश की घटनाओं के विरोध में हिंदू संगठनों ने निकाला जुलूस

कौशाम्बी। मनौरी बाजार में हिंदू संगठनों के कार्यकताओं ने बांग्लादेश में हो रही हिंदुओं की हत्याएं एवं हिंदू बेटियों के साथ हो रहे दुष्कर्म एवं उनकी बेरहमी से की जा रही हत्या मंदिरों को तोड़ने मूर्तियों को तोड़ने एवं हिंदू घरों को जलाने लूटने का जो कार्य किया जा रहा है उसके विरोध में जुलूस निकाला गया जिसमें सभी लोग तख्तियां लिए हुए थे नारे लगा रहे थे हिंदुओं को बांग्लादेश में जीने का अधिकार दो बांग्लादेशी हिंदुओं का संरक्षण दो सुरक्षा दो यह न समझो कि राणा की शिवा की तलवार सोई है जब जब हिंदू जागा है हिंदुओं का दुश्मन भागा है जिहादी हत्यारों को फांसी दो फांसी दो आदि नारे लगाते हुए पूरे बाजार का भ्रमण किया एवं जिसका नेतृत्व भाजपा नेत्री विनीता गुप्ता पुरुषोत्तम दास प्रमोद चंद्र काशी विकास केशव अनूप पवन विनय राजू अनिल प्रधान कुबेरचंद रिंकू पूनम जागृति आदि महिलाओं ने भी अपने साथियों सहित इस कार्यक्रम में भागीदारी की एवं हिंदू बहनों पर हो रहे अत्याचार से सभी बहुत आक्रोश थी।

सम्पादकीय

बारिश के कारण सड़कों को भी बहुत नुक्सान पहुंचा

भारत में जून जुलाई और अगस्त बारिश के महीने होते हैं और पिछले कुछ दिनों से पूरे उत्तर भारत में भारी बारिश से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। कहीं कहीं तो बारिश ने भारी तबाही मचाई है। सच तो यह है कि बारिश देश में इन दिनों आफत बनकर बरस रही है। हाल ही में मौसम विभाग द्वारा 13 अगस्त को ही केरल, राजस्थान, तमिलनाडु, पुडुचेरी, कराईकल और उत्तराखंड में भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया। वहीं दिल्ली में 16 अगस्त तक मध्यम से तेज बारिश की चेतावनी जारी की गई है। लगातार बारिश के कारण देश में निचले इलाकों में जलभराव की समस्या उत्पन्न हो गई है, वहीं बारिश के कारण सड़कों को भी बहुत नुक्सान पहुंचा है। देश के विभिन्न हिस्सों में अनेक सड़क मार्गों पर इन दिनों ट्रैफिक जाम की समस्या पैदा हो गई है। हिमाचल प्रदेश से लेकर केरल तक बारिश कहर बरपा रही है। पंजाब, उत्तराखंड, हरियाणा, दिल्ली, पूर्वी राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल, झारखंड, पूर्वोत्तर भारत, केरल, तमिलनाडु, और दक्षिण कर्नाटक में इन दिनों बारिश का दौर जारी है। रह-रहकर कहीं हल्की तो कहीं मध्यम और तेज बारिश हो रही है। नदियां और नालें इन दिनों उफान पर बह रहे हैं। सच तो यह है कि बारिश हमारे देश के नगर नियोजन की पोल खोलती नजर आती है। आज देश में अनेक सड़कों पर तीन से चार फीट तक पानी जमा नजर आ रहा है। मेट्रो सीटीज से लेकर छोटे शहरों, गांव गलियों, चौराहों तक का बुरा हाल है।

हिमाचल में यह हाल है कि अचानक भारी बारिश के कारण पांच राष्ट्रीय सड़क मार्ग बंद हो गए और हिमाचल में 288 विभिन्न सड़कें बंद हो गई। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में बारिश के दौरान अनेक सड़कें अवरूद्ध हो जाती हैं, जिससे आमजन को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। केरल के वायनाड में जान-माल को हाल ही में काफी नुकसान पहुंचा। केरल ही नहीं अब तो लगभग लगभग संपूर्ण उत्तर भारत बारिश की चपेट में है। मीडिया के हवाले से पता चला है कि उत्तर प्रदेश के

15 जिलों में बाढ़ आ गई है। वाराणसी में 65 घाट डूब गए हैं। जगह-जगह एनडीआरएफ को तैनात किया गया है। मध्य प्रदेश तालाब फूट गया, 20 गांवों में अलर्ट जारी किया गया है। दरअसल, मध्य प्रदेश के मुरैना में तालाब फूटने से 4 गांवों में पानी घुस आया है। इधर, उत्तर प्रदेश में गंगा और यमुना उफान पर हैं। 15 जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। खबरें आ रही हैं कि लखीमपुर में शारदा नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण 250 गांवों में पानी भर गया है और करीब 2.50 लाख लोग प्रभावित हैं।

हिमाचल प्रदेश के चंबा में सोमवार (12 अगस्त) को पहाड़ी से पत्थर गिरने से 2 लोगों की मौत हो गई। इतना ही नहीं, यह भी खबरें आईं हैं कि हिमाचल प्रदेश में लैंडस्लाइड-बाढ़ के कारण शिमला-किन्नौर सहित 2 नेशनल हाईवे और 195 सड़कें बंद हैं। ऊना में 11 अगस्त को 3 लड़कियां बाढ़ में बह गईं।

वक्फ विधेयक: सुधार की खाल में सांप्रदायिकता

- राजेंद्र शर्मा

वक्फ कानून में संशोधन की इस कसरत की आलोचना करने वाले इसका दावा कर रहे हों कि 1995 का वक्फ कानून अपने आप में कोई आदर्श कानून था और उसमें किसी संशोधन या सुधार की कोई गुंजाइश या आवश्यकता ही नहीं थी। यह तो खैर किसी का भी कहना नहीं था कि वक्फ संबंधी सारी व्यवस्था बहुत ही अच्छी तरह से चल रही थी, जिसमें कोई कमजोरियां या खामियां थी ही नहीं।

आखिरकार, 1995 के वक्फ कानून में संशोधनों के विधेयक को, फिलहाल एक संयुक्त संसदीय समिति को भेज दिया गया है। मोदी सरकार द्वारा प्रस्तावित किसी विधेयक के लिए ऐसे सलूक को, निश्चित रूप से अपवाद ही कहा जाएगा। संसद के पिछले सत्र तक बिना किसी समुचित चर्चा के बल्कि बिना चर्चा के ही, विधेयकों पर संसद से मोहर लगवाने के अपने उतावलेपन के लिए कुख्यात मोदी सरकार का, 18वीं लोकसभा के पहले सत्र में ही वक्फ विधेयक पर 'विस्तृत और बहुपक्षीय' चर्चा की जरूरत स्वीकार कर लेना और विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति को भेजने के लिए राजी होना, बेशक हाल के आम चुनाव से निकल कर आई सच्चाइयों को प्रतिबिंबित करता है। इससे तो कोई इंकार ही नहीं कर सकता है कि अब संसद में राजनीतिक ताकतों का संतुलन काफी बदला हुआ है। इस बदले हुए संतुलन का ही संकेतक है कि एक ओर सत्ताधारी भाजपा और दूसरी ओर इंडिया गठबंधन के बैनर तले विपक्ष की ताकत, लगभग बराबर है और इन हालात में मुख्यतः तेलुगू देशम तथा जनता दल-यूनाइटेड के साथ गठबंधन के बल पर ही, नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री के पद पर पहुंच पाए हैं। जाहिर है कि सत्ता में होते हुए भी भाजपा इन हालात में, खासतौर पर मोदी के राज के पिछले कार्यकाल की तरह, बहुमत की मनमानी चलाने की उम्मीद नहीं कर सकती है। हालांकि, उसके पास सरकार चलाने के लिए जरूरी बहुमत है, फिर भी विपक्ष की बढ़ी हुई ताकत के सामने, यह बहुमत भी मनमानी चलाने के लिए काफी नहीं है।

फिर वक्फ विधेयक के खास मामले में, यह सिर्फ बहुमत के लिए जरूरी संख्या का मामला नहीं रह सकता था। तेलुगू देशम और जनता दल-यूनाइटेड ने बेशक, इस विधेयक पर भी कोई भाजपा से खुद को अलग नहीं कर लिया था। सहयोगी पार्टियों का सत्ता पक्ष के लिए ऐसा कोई धर्मसंकट पैदा करना तो दूर रहा, लोकसभा में जदयू के प्रवक्ता ने औपचारिक रूप से इस विधेयक की पैरवी भी की थी। इसके बावजूद, यह कहना सही नहीं होगा कि ये सहयोगी पार्टियां इस विधेयक का कोई बढ़-चढ़कर समर्थन कर रही थीं। उल्टे प्रस्तावित विधेयक की विपक्ष की प्रबल आलोचनाओं से ये पार्टियां साफ तौर पर असहज नजर आ रही थीं और विधेयक की उनके समर्थन के सारे तर्क, बचाव के तर्क थे। वर्ना उनकी दलीलों के पीछे छुपी बेचैनी आसानी से पढ़ी जा सकती थी।

और ऐसा होना, इस संशोधन विधेयक के लाए जाने की पूरी कसरत के अर्थ और मंतव्यों के चलते होना स्वाभाविक ही था, जिनको विपक्ष द्वारा बलपूर्वक रेखांकित किया जा रहा था। पहला सवाल तो यही था कि वक्फ कानून में इस तरह के संशोधनों की आवश्यकता ही क्या थी? संबंधित विधेयक लोकसभा में पेश करते हुए, संसदीय कार्यमंत्री तथा अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री किरण रिजिजू तथा सत्ता पक्ष के अन्य वक्ताओं द्वारा भी इसके तमाम दावे किए जाने के बावजूद कि परामर्श की एक विस्तृत प्रक्रिया से गुजर कर उक्त संशोधन प्रस्ताव तैयार किए गए थे, यह सच किसी से छुपा हुआ नहीं था कि उक्त विधेयक किसी भी तरह की पॉपूलर डिमांड पर नहीं लाया गया था। उल्टे मुस्लिम समुदाय, जिसके धार्मिक आचार के हिस्से के तौर पर दान-पुण्य के कार्य के तौर पर, चल-अचल संपत्तियां वक्फ करने की रिवायत आती है और इन संपत्तियों की समुचित व्यवस्था के लिए ही वक्फ कानून बनाया गया है, और मुस्लिम धार्मिक राय के बड़े हिस्से द्वारा इस पूरी कसरत को गहरे संदेह की नजर से ही देखा जा रहा था।

ऐसा भी नहीं है कि वक्फ कानून में संशोधन की इस कसरत की आलोचना करने वाले इसका दावा कर रहे हों कि 1995 का वक्फ कानून अपने आप में कोई आदर्श

कानून था और उसमें किसी संशोधन या सुधार की कोई गुंजाइश या आवश्यकता ही नहीं थी। यह तो खैर किसी का भी कहना नहीं था कि वक्फ संबंधी सारी व्यवस्था बहुत ही अच्छी तरह से चल रही थी, जिसमें कोई कमजोरियां या खामियां थी ही नहीं। लेकिन, सबसे पहली बात तो यह कि इस पूरी कसरत के पीछे सत्ताधारी भाजपा की नीयत ही संदेह के घेरे में थी। बेशक, सत्ता पक्ष की ओर से गरीब-मुसलमानों की भलाई की चिंता का जमकर दिखावा किया जा रहा था। वर्तमान व्यवस्था में मुस्लिम महिलाओं के निर्णय प्रक्रियाओं से बाहर ही छूटे रहने पर काफी आंसू बहाए जा रहे थे। वक्फ बोर्डों तथा वक्फ से जुड़ी अन्य संस्थाओं के बेशुमार मामलों-मुकदमों में फंसे होने पर बड़ा अफसोस जताया जा रहा था। और वक्फ की संपत्तियों, विशेष रूप से जमीनों का, मुसलमानों की भलाई के लिए ठीक से उपयोग न हो पाने का, खूब रोना रोया जा रहा था। लेकिन, एक ओर जिस तरह के पैट्रनाइजिंग सुर में और दूसरी ओर, मुस्लिम समुदाय की संस्थाओं व समुदाय के नेताओं के प्रति हिकारत के सुर में, ये सारी दलीलें दी जा रही थीं, उनसे कोई समझ सकता था कि इस कसरत के पीछे कम से कम मुसलमानों का भला करने की इच्छा नहीं थी।

उल्टे जिस तरह से प्रस्तावित संशोधनों के जरिए, सुधार के नाम पर वास्तव में वक्फ की संपत्तियों पर केंद्र सरकार के नियमनकारी नियंत्रण को उल्लेखनीय तरीके से बढ़ाने की कोशिश की जा रही था, वह किसी से भी छुपा नहीं रहा। वक्फ की संपत्तियों के रिकार्डों को चुस्त-दुरुस्त बनाने के नाम पर, न सिर्फ वक्फ संपत्तियों के लिए एक केंद्रीय रजिस्ट्रेशन व्यवस्था का प्रस्ताव किया गया है बल्कि इन संपत्तियों के संबंध में तमाम जानकारियां नया कानून बनने के छः महीने के अंदर-अंदर अपलोड किए जाने तथा तमाम नयी वक्फ संपत्तियों का रजिस्ट्रेशन उक्त पोर्टल के जरिए ही वक्फ बोर्डों के सामने पेश किए जाने के तकनीकी रूप से उन्नत किए जाने के नजर आने वाले किंतु वास्तव में सब कुछ ज्यादा केंद्रीयकृत करने वाले प्रावधान किए गए हैं। लेकिन, इससे भी ज्यादा समस्यापूर्ण तरीके से पुराने कानून की उस धारा-40 को हटा दिया गया है, जिसके तहत वक्फ ट्रिब्यूनलों को यह तय करने का अधिकार होता था कि क्या कोई संपत्ति वक्फ होने लायक है। ट्रिब्यूनलों की जगह पर, अब जिला कलेक्टर को ऐसे मामलों में अंतिम निर्णयकर्ता बना दिया गया है। और जब तक कलेक्टर द्वारा संबंधित संपत्ति के वक्फ लायक होने की अंतिम रिपोर्ट सरकार को नहीं दे दी जाती है, संबंधित संपत्ति को वक्फ संपत्ति की तरह नहीं बरता जा सकेगा। इसका अर्थ यह है कि जब तक कि सरकार मामले का फैसला नहीं कर देती है, वक्फ बोर्ड ऐसी किसी संपत्ति का नियंत्रण नहीं ले सकता है। इसके साथ ही, संशोधन प्रस्तावों के जरिए केंद्र सरकार को 'किसी भी वक्फ का, कभी भी ऑडिट किए जाने का निर्देश देने' का अधिकार दे दिया गया है। वक्फ बोर्डों पर लगाई गई इसकी शर्त के ऊपर से है कि राज्य सरकारों द्वारा तैयार किए गए ऑडिटरों के पैनल में से किसी ऑडिटर से हर साल अपने खातों का ऑडिट कराएंगे। उपयुक्त खाते नहीं रखने पर मुतवल्लियों पर जुमार्ने भी लगाए जा सकेंगे।

केंद्रीयकरण के ऐसे ही एक और कदम में, वक्फ ट्रिब्यूनलों को अब तीन सदस्यीय निकाय के बजाय, सिफ दो सदस्यीय निकाय बना दिया जाएगा। इसके ऊपर से अब ट्रिब्यूनल में एक जिला जज होगा और दूसरा सदस्य, राज्य सरकार में ज्वाइंट सेक्रेटरी की रैंक का अधिकारी होगा। इसके बावजूद, अब वक्फ ट्रिब्यूनलों के निर्णयों की अंतिमता खत्म हो जाएगी और कोई भी पीड़ित पक्ष, इन निर्णयों के खिलाफ सीधे हाई कोर्ट में अपील कर सकेगा। विवादित संपत्तियों के कलेक्टर के अंतिम रिपोर्ट न देने तक वक्फ न माने जाने के साथ जुड़कर, ट्रिब्यूनल के निर्णय की अंतिमता खत्म करने की व्यवस्था, वक्फ की व्यवस्था को ही अस्थिर करने का काम करेगी। इससे भी ज्यादा समस्यापूर्ण यह है कि अब वक्फ की परिभाषा को ही बदल दिया गया है। अब संपत्ति का कोई कानूनी मालिक ही, औपचारिक डीड के जरिए संपत्ति वक्फ कर सकेगा, वह भी तब जबकि वह 'कम से कम पांच साल से इस्लाम का पालन कर रहा हो।'

महत्वपूर्ण है कि इन संशोधनों के जरिए 'उपयोग के जरिए वक्फ' के विचार को खत्म ही कर दिया गया, जो इसकी इजाजत देता था कि इस रूप में उपयोग होता आ रहा होने के आधार पर किसी संपत्ति को वक्फ मान लिया जाए, भले ही उसकी मूल डीड विवादित हो। परंपरागत रूप से अक्सर वक्फ की जाने वाली संपत्तियां मौखिक रूप से ही इसके लिए समर्पित की जाती थीं और औपचारिक दस्तावेजीकरण काफी बाद में ही आया है। दूसरी ओर, वक्फ संपत्ति और सरकारी संपत्ति के दावों में किसी टकराव की सूरत में संपत्ति पर सरकार का दावा ही माना जाएगा–'कोई सरकारी संपत्ति, इस कानून के बनने से पहले या बाद में, अगर एक वक्त संपत्ति के रूप में शिनाख्त की जाती है या वक्फ संपत्ति घोषित की जाती है, तो उसे वक्फ की संपत्ति नहीं माना जाएगा।' जाहिर है कि यह सब वक्फ की पूरी की पूरी व्यवस्था को अस्थिर करने का ही काम कर सकता है।

मालदीव यात्रा के दौरान राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू का जैसा दोस्ताना रवैया देखने को मिला

-ललित गर्ग-

चीन की कटपुतली बने मालदीव को आखिर भारत की कीमत समझ में आ गयी। चीन एवं पाकिस्तान की कुचालों एवं षडयंत्रों से भारत के पडोसी देशों की हालात जर्जर होती जा रही है, जिसका ताजा उदाहरण बांग्लादेश है। लेकिन एक पडोसी देश के रूप में पिछले करीब एक साल की अवधि में मालदीव ने भी गहरे हिचकोले खाने एवं कई कड़वे अनुभवों से गुजरने के बाद अब पटरी पर आ गया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर की पिछले सप्ताह हुई मालदीव यात्रा के दौरान वहां के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू का जैसा दोस्ताना रवैया देखने को मिला, जिस तरह से उन्होंने भारत के साथ आगे बढ़ने की मंशा जाहिर की, यह उन्हें अपनी गलती का अहसास कराने का ही द्योतक कहा जा सकता है। देर आये दुरस्त आये वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए भारत-मालदीव के रिश्तों को भावनात्मक राजनीति के तकाजों पर कूटनीति की ठोस हकीकतों की जीत के रूप में देखा जा सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पूर्व कार्यकाल में पडोसी देशों की यात्रा करते हुए उनसे भारत के संबंधों को सौहार्दपूर्ण एवं विकासमूलक बनाने के प्रयास किये। इसी के तहत मोदी की तत्कालीन मालदीव दौरे का मुख्य उद्देश्य नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के तहत सुरक्षा, विकास की दृष्टि के भारत के संबंधों को और मजबूत करना था। दौरे के दौरान मोदी को मालदीव के सर्वोच्च सम्मान ह्यनिशान इजुद्दीनह्ल से भी सम्मानित किया गया। दरअसल मालदीव की दक्षिण एशिया और हिन्द महासागर में जो स्ट्रेटजिक (सामरिक) लोकेशन है, वह भारत के लिए बेहद अहम है। मालदीव में पिछले कुछ सालों में चीन ने अपना प्रभुत्व बढ़ाया है, उसे हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक और रणनीतिक सहयोग बढ़ाने पर उल्लेखनीय सफलता भी मिली। लेकिन यह सब करने के पीछे चीन का मुख्य लक्ष्य मालदीव की भारत से दूरी बढ़ाना भी रहा, जिसमें उसे बड़ी सफलता मिली। इस प्रकरण की शुरूआत पिछले साल हुए राष्ट्रपति चुनाव में एक प्रत्याशी के तौर पर मुइज्जू ने भारत विरोधी भावनाओं पर दांव लगाया था। वह बार-बार सार्वजनिक तौर पर यह संकल्प करते देखे गए कि सत्ता में पहुंचते ही भारतीय सैनिकों को मालदीव से विदा कर देंगे। हालांकि सबको पता था कि भारतीय सैनिकों की वहां मौजूदगी सांकेतिक ही थी। भारत और मालदीव के बीच सदियों पुराने प्रेम एवं सौहार्द के रिश्ते एकाएक तल्ख होते दिखाई देने लगा। मालदीव की तरफ से लगातार

तनाव बढ़ाने वाले बयान आते रहे, लेकिन भारत की तरफ से फिर भी संतुलित नीति अपनाई जाती रही है। इसी दौरान मोदी की लक्षद्वीप यात्रा की, जिसका उद्देश्य कत्तई किसी भी देश के पर्यटन को नुकसान पहुंचाना नहीं था, बल्कि अपने देश में पर्यटन की नई संभावनाओं को तलाशना है। प्रधानमंत्री मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणियों के बाद सोशल मीडिया पर बॉयकाट मालदीव ट्रेंड होने लगा। इस हैशटैग के साथ लोगों के ऐसे पोस्ट की बाढ़ आ गई, जिसमें वे मालदीप और लक्षद्वीप की तुलना करते हुए लक्षद्वीप को बेहतर बता रहे है। मुइज्जू के भारत विरोध उनके अनेक मंत्रियों की तल्ख टिप्पणियों एवं रवैये के कारण वहां की अर्थ-व्यवस्था गिरने लगी, विशेषतः पर्यटन उद्योग को भारी नुकसान का सामना करना पड़ा। मालदीव की नई सरकार के रुख को देखते हुए भारत ने भी वेट एंड वॉच की पॉलिसी अख्तियार कर ली। नतीजा यह हुआ कि भारत से छुट्टियां बिताने मालदीव जाने वाले टूरिस्टों की संख्या कम होने लगी। इस साल के शुरूआती चार महीनों की अवधि में वहां भारतीय टूरिस्टों की संख्या में 42 प्रतिशत घट गयी। ध्यान रहे, मालदीव की जीडीपी में टूरिज्म का योगदान 30 प्रतिशत है। इतना ही नहीं, भारत के सहयोग से चलने वाले इन्फ्रा प्रॉजेक्ट्स और हेल्थ, एजुकेशन और कृषि क्षेत्रों से जुड़े कई प्रॉजेक्ट्स का भविष्य भी अधर में लटका दिखाई देने लगा। मुइज्जू सरकार इनकी अनदेखी नहीं कर सकती थी। किसी अन्य देश का सहयोग भी इसकी भरपाई नहीं कर सकता था। ऐसे में मुइज्जू सरकार ने पिछले कुछ समय से अपने रुख में बदलाव का संकेत देना शुरू कर दिया था। भारत ने भी इन संकेतों का सम्मान किया। नतीजा यह कि विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मालदीव की यात्रा की, जिसके कारण दो पड़ोसी देशों के पुराने रिश्ते फिर पटरी पर लौटते दिख रहे हैं। मालदीव एक समय भारत का सहयोगी हुआ करता था। वहां की अर्थव्यवस्था चीन और भारत पर निर्भर है। हालांकि, मालदीव की भारत से नजदीकी हमेशा चीन को खटकती थी, जिस कारण उसने इस देश को अपने कर्ज के जाल में फंसाया। धीरे-धीरे इस देश की माली हालत बुरी होने लगी, जिसके बाद यहां चीन समर्थक और इंडिया आउट का नारा देने वाले मोहम्मद मुइज्जू की सरकार बनी। पाकिस्तान एवं चीन के दबाव में उनके नए राष्ट्रपति के सुर बदले। वहां भारत-विरोधी स्वर उग्रतम बने। मुइज्जू ने राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले चीन का ही दौरा किया था और इसके बाद उन्होंने कई भारत विरोधी फैसले किए, लेकिन इन स्थितियों के कारण हुए भारी नुकसान का झेलते हुए मालदीव चीन के मनसूबों का भाप गया। भारत का पड़ोसी देश मालदीव हिंद महासागर पर बसा है और इस कारण यह सुरक्षा की दृष्टि से भी अहम है। यहां की नई सरकार चीन के करीब दिख रही है और चीन अपने मनसूंबो को पूरा करने के लिये गलत रास्तों पर ढकेल रहा है। मालदीव के नए राष्ट्रपति ने तो अपने चुनाव प्रचार में ही ह्यइंडिया आउटह्ल का नारा दिया था। भारत एवं मालदीव के बीच तल्खी अगर बढ़ती तो हिंद महासागर रीजन की सिक्योरिटी भारत के लिए परेशानी का सबब बन सकती है। चीन हमारे रिश्तों की तल्खी का फायदा उठाने की लगातार कोशिश कर रहा है। जिसका भारत ने खयाल रखा। इसलिए भारत सरकार की तरफ से संतुलित नीति पर बल दिया जाता रहा है, जबकि मालदीव की तरफ से तो लगातार काफी कुछ गलत कहा जाता रहा है। लेकिन मालदीव को भी यह समझ आ गया कि भारत से दूरी उसके लिये नुकसानदायी है। चीन की तुलना में भारत से मालदीव के हित ज्यादा गहराई से जुड़े हैं। फिर भी मुइज्जू भारत के साथ रिश्तों में आ रही संभावित दूरी की भरपाई चीन से करीबी रिश्तों के रूप में करना चाहते हैं। हालांकि एक्सपर्ट्स तब भी इस बात की ओर ध्यान खींच रहे थे कि भू-राजनीति की वास्तविकताओं के मद्देनजर यह संभव नहीं है कि मालदीव में जो भूमिका भारत निभा सकता है, वह चीन निभाने लगे। फिर भी चीन की शह पर भारत को आंख दिखाने की कोशिश होती रही है। राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के बाद मुइज्जू के बयानों में हलकी सी नरमी जरूर दिखी, लेकिन नीतियों की दिशा बदलने का प्रयास फिर भी जारी रहा। लेकिन इससे हो रहे नुकसान को लेकर मुइज्जू सरकार सतर्क हो गयी। पर्यटन ही मालदीव की आय का सबसे बड़ा स्रोत है। भारत से करीब दो लाख से ज्यादा लोग हर साल मालदीव की यात्रा करते हैं। मालदीव में मौजूद भारतीय हाई कमिशन के आंकड़ों को मानें तो साल 2022 में 2 लाख 41 हजार और 2023 में करीब 2 लाख लोगों ने मालदीव की यात्रा की है। ऐसे में भारत-मालदीव के बीच बढ़ रही दूरी का असर मालदीव के टूरिज्म एवं आर्थिक व्यवस्था पर पड़ना स्वाभाविक था।

भारत हमेशा अपने पड़ोसियों के प्रति अच्छा रहा हैं लेकिन चीन पोषित भारत विरोध की ऐसी अकारण नफरत भारत क्यों बर्दाश्त करें? निश्चित ही मालदीव के रवैये का दोनों देशों के बीच की सदियों पुरानी दोस्ती पर नकारात्मक प्रभाव पडा। भारतीय यदि मालदीव का बहिष्कार करने लगा तो वहां अर्थव्यवस्था चरमरा जायेगी, यह बात समझने में मालदीव को देर नहीं लगी। अपनी भूल को सुधारते हुए उसने भारत की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया है जो दोनों देशों के हित में है। भारतीय उपमहाद्वीप के देशों के केनवास पर शांति, प्रेम, विकास और सह-अस्तित्व के रंग भरने में भारत सक्षम है, पडोसी देशों में भारत ही मजबूत स्थिति में है, आर्थिक एवं सामरिक दोनों ही दृष्टि से भारत अपने पडोसी देशों में सशक्त एवं ताकतवर है, उसे मनोबल के साथ पडोसी देशों में स्थिरता, शांति, लोकतंत्र एवं आपसी समझ की ज्योत जलाने के लिये तत्पर रहना चाहिए, जो उन देशों के साथ भारत के लिये भी जरूरी है।

विचाराधीन कैदियों के अधिकारों के हनन का सवाल

- के रवींद्रन

विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा न्यायिक प्रणाली की विफलताओं की एक कठोर याद दिलाती है। प्रणाली की अक्षमता न केवल व्यक्तियों को निष्पक्ष और समय पर सुनवाई के उनके अधिकार से वंचित करती है, बल्कि वंचितता के एक चक्र को भी बनाये रखती है जो असमान रूप से गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों को प्रभावित करती है। वित्तीय बाधाओं के कारण जमानत प्राप्त करने में असमर्थता न्याय के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा को रेखांकित करती है।

जब भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ कहते हैं कि लोग हमारी अदालतों के काम करने के तरीके से तंग आ चुके हैं, तो न्यायिक प्रणाली पर इससे अधिक गंभीर आरोप और क्या हो सकता है! उनका यह दावा कि न्यायपालिका को केवल न्यायाधीशों द्वारा न्यायाधीशों के लिए संचालित होने वाली संस्था नहीं होना चाहिए, एक महत्वपूर्ण आलोचना है जो भारत के कानूनी ढांचे के भीतर प्रणालीगत मुद्दों को रेखांकित करती है।

यह दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत असंतोष का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि एक अवलोकन है जो समय के साथ सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों और टिप्पणियों में प्रतिध्वनित हुआ है। पिछले सप्ताह सर्वोच्च न्यायालय में सप्ताह भर चलने वाली विशेष लोक अदालत के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में की गई मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की टिप्पणी, अदालत की हालिया कार्रवाइयों और टिप्पणियों के संदर्भ में विशेष रूप से मार्मिक है।

हाल ही में, सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को त्वरित सुनवाई के अधिकार से वंचित करने की कड़ी आलोचना की, जो एक कानूनी लड़ाई में उलझे हुए हैं, जिसने काफी ध्यान आकर्षित किया था। उनके मामले ने मीडिया में महत्वपूर्ण कवरेज प्राप्त करने के साथ-साथ व्यापक प्रणालीगत मुद्दों का एक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। इसलिए, सुप्रीम कोर्ट का निर्णय केवल उनके व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में नहीं है, बल्कि न्यायिक प्रक्रिया पर एक व्यापक टिप्पणी भी है।

सिसोदिया, बेशक, एक हाई-प्रोफाइल व्यक्ति हैं, लेकिन भारतीय जेलों में बंद लाखों गुमनाम विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा पर विचार करें, जो या तो उचित सुनवाई के बिना या जमानत हासिल करने के साधनों के बिना जेल में हैं। उनमें से अधिकांश, अक्सर वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं, तथा खुद को कानूनी अधर में फंसा हुआ पाते हैं। उनके मामले अनिश्चित काल के लिए विलंबित हो जाते हैं।

यह स्थिति इस बात की स्पष्ट याद दिलाती है कि न्यायिक प्रणाली की विफलताएं उन लोगों को कैसे प्रभावित करती हैं जिनके पास तत्काल न्यायिक हस्तक्षेप को आकर्षित करने के लिए संसाधन या बुद्धि की कमी होती है। विचाराधीन कैदियों का मुद्दा कोई नया नहीं है, लेकिन सर्वोच्च न्यायालय की हालिया टिप्पणियों और निर्णयों के कारण इस पर फिर से ध्यान गया है। कई मामलों में, विचाराधीन कैदी अपने मुकदमों की सुनवाई शुरू हुए बिना ही लंबे समय तक जेल में रहते हैं, जो न्याय वितरण प्रणाली में एक महत्वपूर्ण दोष को उजागर करता है।

न्यायिक प्रक्रिया में देरी, न्यायिक कर्मियों की कमी और प्रणालीगत अक्षमताओं के कारण यह समस्या और भी बढ़ जाती है, जो मामलों के समय पर निर्णय को रोकती हैं। इस संदर्भ में, मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ की टिप्पणी सुधार की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को दशार्ती है। न्यायिक प्रणाली, जैसा कि यह है, अपनी प्रक्रियात्मक देरी और अक्षमताओं के बोझ तले संघर्ष करती हुई प्रतीत होती है। आलोचना केवल व्यक्तिगत अधिकारों के बारे में नहीं है, बल्कि समय पर न्याय देने में प्रणालीगत विफलता के बारे में है। व्यापक निहितार्थ महत्वपूर्ण हैं। वह प्रणालीगत बदलाव की आवश्यकता की ओर इशारा करते हैं, जिसमें न केवल प्रक्रियागत देरी बल्कि अंतर्निहित अक्षमताएं भी शामिल हैं जो प्रणाली को प्रभावित करती हैं।

न्यायपालिका की भूमिका केवल निर्णय देना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि न्याय निष्पक्ष और शीघ्रता से दिया जाये। जब प्रणालीगत मुद्दे इस भूमिका को कमजोर करते हैं, तो यह न्यायिक प्रक्रिया में जनता के विश्वास और भरोसे को खत्म कर देता है। न्यायपालिका को एक ऐसी संस्था बनने का प्रयास करना चाहिए जो सभी के लिए न्याय के सिद्धांतों को कायम रखे, न कि केवल एक निकाय जो अपने स्वयं के प्रक्रियात्मक ढांचे के दायरे में काम करता है। ध्यान इस ओर केंद्रित होना चाहिए कि प्रणाली को सभी व्यक्तियों की जरूरतों के लिए अधिक सुलभ, कुशल और उत्तरदायी बनाया जाये, चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो।

निस्संदेह, न्यायिक प्रणाली के सामने आने वाली चुनौतियां जटिल और बहुआयामी हैं। उन्हें तत्काल चिंताओं, जैसे कि विचाराधीन कैदियों की दुर्दशा, और दीर्घकालिक संरचनात्मक मुद्दों, दोनों को संबोधित करने के लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है। न्यायिक प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने, न्यायाधीशों और न्यायालय कर्मियों की संख्या बढ़ाने और प्रक्रियात्मक दक्षता बढ़ाने के प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके अतिरिक्त, देरी और अक्षमताओं के मूल कारणों, जैसे पुरानी प्रक्रियाएं और अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, को संबोधित करना अधिक प्रभावी न्यायिक प्रणाली बनाने में आवश्यक होगा।

राम वन गमन मार्ग को जल्द करें भूमि अधिग्रहण: डीएम

एडीएम करें प्रतिदिन प्रगति समीक्षा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने राम वन गमन मार्ग पैकेज-5 के लिए भूमि अधिग्रहण प्रगति/संपत्तियों के मूल्यांकन व वन विभाग से भूमि लेने की समीक्षा व सिटी डेवलपमेंट प्लान, डिफेंस कारीडोर, बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस-वे (लिंक एक्सप्रेस-वे मार्ग) को भूमि अधिग्रहण व अंश निर्धारण बाबत बैठक में लेखपालों को निर्देश दिये कि जिन गांवों में किसानों ने अंश निर्धारण अभी तक पेश नहीं किया। तत्काल

बैठक में निर्देश देते जिलाधिकारी।

अंश निर्धारण जमा करायें, ताकि किसानों से बैनामा लेकर धनराशि भुगतान किया जा सके।

मंगलवार को कलेक्टेट्ड सभागार में बैठक की अध्यक्षता करते हुए डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने तहसीलदार कर्वी व राजापुर को निर्देश दिये कि लेखपालों से अंश व कर निर्धारण करायें। अच्छी तरह से अंश निर्धारण परीक्षण किया जाये। बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी को निर्देश दिये कि सीओ चकबंदी, एसीओ चकबंदी के पास जिन किसानों की वरासत पत्रावली लंबित है, तत्काल निस्तारण करें। बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी को निर्देश दिये कि जो चकबंदी बाबत गांव हैं, मौके पर निस्तारण किया जाये। जिन गांवों के काश्तकार बाहर हैं, संबंधित तहसीलदार संपर्क कर भूमि अधिग्रहण करायें। एसडीएम को निर्देश दिये कि संबंधित गांवों के लेखपालों से प्रतिदिन कास्तकारों के अंश निर्धारण का लक्ष्य तय करें। डीएफओ से कहा कि जो वन विभाग की भूमि राम वन गमन मार्ग में पड़ रही है, संबंधित एसडीएम से संपर्क कर भूमि व्यवस्था सुनिश्चित करायें। डिफेंस कारीडोर भूमि अधिग्रहण बाबत समीक्षा कर एसडीएम व बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी को निर्देश दिये कि प्रगति करायें। माइक्रो प्लान बनाकर संबंधित गांवों में शिविर लगायें। एडीएम एफआर से कहा कि प्रतिदिन संबंधित एसडीएम व बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी से भूमि अधिग्रहण की प्रगति समीक्षा करें। डीएम ने एसडीएम व तहसीलदार कर्वी को निर्देश दिये कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस-वे के विस्तारित सड़क निर्माण को संबंधित गांवों के काश्तकारों को चिन्हित कर भूमि का बैनामा करायें। बैठक में एडीएम एफआर उमेश चन्द्र निगम, एसडीएम कर्वी सौरभ यादव, राजापुर प्रमोद कुमार झा, मानिकपुर पंकज वर्मा, डीएफओ नरेंद्र कुमार सिंह, बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी एमएल धर्मान, एक्सईएन लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्रनाथ, जिला खनिज अधिकारी सुधाकर सिंह, तहसीलदार कर्वी वाचस्पति सिंह आदि मौजूद रहे।

प्रदेश स्तर पर खेल को खिलाडी हुए चयनित

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रदेश सरकार ने राज्य कर्मचारियों/अधिकारियों के शारीरिक संवर्धन व विकास को खेलकूद प्रतियोगिताओं में जिला, मंडल व प्रदेश स्तर पर चयनित कर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने को देश के विभिन्न स्थानों पर भेजती है। पूर्व में जिले से पूर्व सीडीओ अमित आसेरी, पूर्व डीएम अभिषेक आनंद राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में चयनित हुए थे। बांदा, हमीरपुर, चित्रकूट, महोबा के अधिकारी/कर्मचारियों का चयन स्टेडियम में क्रिकेट, बैडमिंटन, शतरंज, एथलेटिक्स खेलों में हुआ। खासतौर से अरविंद मोहन, अभिषेक कुमार, डॉ पंकज सक्सेना, नेहा, रमाशंकर यादव, भारत, कमल कुमार, रामकिशोर, सतीश कुमार, जितेंद्र कुमार आदि ने हिस्सा लिया। चयनित खिलाड़ी 22-23 अगस्त मुरादाबाद, कानपुर, अयोध्या, लखनऊ में भाग लेंगे। खेल अनुदेशक श्याम सुंदर, कृष्णा, खेल सचिव अवधेश प्रताप सिंह, अंगद सिंह, फिरोज अंसारी ने खिलाड़ियों का चयन किया। एडीएम एफआर उमेश चंद्र निगम चयन समिति के अध्यक्ष रहे। क्षेत्रीय कीड़ा अधिकारी विजय कुमार की देखरेख में चयन हुआ।

समिति नहीं करा रही जनहित के कार्य

अखंड भारत संदेश

पहाडी/चित्रकूट। पहाडी ब्लाक के पहाडी बुजुर्ग गांव के राजबहादुर, रोहित कुमार, रामस्वरूप, तौरा देवी, माया देवी, राममिलन, सुमित्रा देवी, गोकुल प्रसाद, राजकुमार, ज्ञानमती आदि ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि त्रिसदस्यीय समिति जनहित के कार्यों की जगह व्यक्ति विशेष के घरों तक निर्माण कार्य कराकर सरकारी धन का दुरुपयोग कर रही है।

मंगलवार को पहाडी ब्लाक के पहाडी बुजुर्ग गांव के ग्रामीणों ने जिलाधिकारी को सौंपे पत्र में कहा कि पहाडी में बरेठी रोड से डॉ मनोज तक इंटरलॉकिंग करवाई है। डॉ मनोज के घर व राजकुमार गुप्ता तथा भइया प्लाटिंग कर जमीन बेंच रहे हैं। एक-दो लोगों के लिए तीन लाख रुपये खर्च किये हैं। सिकरी रोड से दिनेश के घर तक बनी इंटरलॉकिंग में भी एक-दो मकानों को लाभ देने को चार लाख रुपये खर्चकर रोड बनाई है। राजापुर रोड से कटरा देवी तक का रास्ता ज्यादा खराब है। लोगों को निकलने में परेशानी होती है। दो-दो मन्दिर हैं, रोजाना मन्दिर जाने को सैकडों लोग निकलने हैं। गांव का मुख्य मार्ग है। यहां समिति व सचिव कार्य नहीं करा रही। उन्होंने जनहित के कार्यों को कराने की मांग की है।

जानलेवा हमले का वारंटी दबोचा

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक राजापुर मनोज कुमार की अगुवाई में दरोगा सिद्धनाथ राय ने बलबा, जानलेवा हमला व डकैती एक्ट के वारंटी दिवाकर सिंह पुत्र राममूरत सिंह नांदिन कुर्मियान को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा सिद्धनाथ राय व सिपाही राघवेन्द्र पटेल शामिल रहे।

काकोरी ट्रेन शहीदों को दी श्रद्धांजलि

चित्रकूट। काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव व हर घर तिरंगा अभियान में बैंडबाजे की राष्ट्रीय धुन पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी। मंगलवार को काकोरी ट्रेन एक्शन शताब्दी महोत्सव व हर घर तिरंगा अभियान में पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देश पर सीओ सिटी राजकमल की अगुवाई में एलआईसी तिराहा स्थित शहीद स्मारक व धनुष चैराहा कर्वी में बैंडबाजे की राष्ट्रीय धुनों पर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी। इस मौके पर प्रतिसार निरीक्षक शिवनारायण, यातायात प्रभारी शैलेन्द्र सिंह, दरोगा एपी राकेश समाधिया आदि मौजूद रहे।

गौशालाओं में रखें सफाई व्यवस्था: पाठक

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ एसडीएम राकेश कुमार पाठक ने गौशाला संचालन बाबत बीडीओ रामजी मिश्रा के साथ बैठक कर प्रधानों व सचिवों को निर्देश दिये कि व्यवस्थित ढंग से गौशाला संचालन करायें।

मंगलवार को एसडीएम राकेश कुमार पाठक ने कहा कि सभी गांवों में गौशाला संचालन बाबत निर्देश जारी किये जा चुके हैं। बारिश के मौसम के मद्देनजर गौवंश को पानी से बचाने की व्यवस्था करें। नियमित रूप से गौशाला की सफाई करायें। गोबर-कीचड से मवेशी परेशान न हों। कमजोर व बीमार गौवंश के

बैठक में निर्देश देते एसडीएम।

इलाज की व्यवस्था करायें। किसी भी हालत में अन्ना गौवंश सड़कों में नहीं घूमने चाहिए। गौवंश की देखरेख को नियमित चरवाहे गौशाला में मौजूद रहें। गौशाला में संरक्षित गौवंश की तादाद नियमित रजिस्टर में अंकित की जाये। नोडल अधिकारियों के प्रतिमाह गौशाला निरीक्षण कर सूचना दी जाये। एसडीएम ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में सचिव व प्रधान गौशालाओं में गौवंश संरक्षण के लिए जिम्मेदार हैं। नगर पंचायत के प्रभारी रवि कुमार को निर्देश दिये कि नगर क्षेत्र में गौशाला संचालन सही ढंग से किया जाये, ताकि मुख्य मार्गों पर मवेशी टहलते न दिखें। नगर व ग्रामीण क्षेत्रों में दूध निकालने के बाद कुछ लोग गौवंश अन्ना छोड देते हैं। इससे सड़क में हादसों की आशंका बनी रहती है। ऐसे मवेशी किसानों की फसल नष्ट करते हैं। पशु पालकों को चेतावनी दें कि गौवंश छोड़ने वाले पालकों पर कार्यवाही की जाये।

जनप्रतिनिधियों-डीएम-एसपी ने बांटे नियुक्ति पत्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निष्पक्ष व पारदर्शी चयन प्रक्रिया के तहत उप्र अधीनस्थ सेवा चयन आयोग से चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र वितरण लोक भवन सभागार लखनऊ से किया। लाइव प्रसारण में बतौर मुख्य अतिथि/विधायक मऊ-मानिकपुर अविनाश चंद्र द्विवेदी, विशिष्ट अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष अशोक जाटव, जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन, पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह की मौजूदगी में लाइव प्रसारण कलेक्ट्रेट सभागार में देखा गया।

मंगलवार को जनप्रतिनिधियों व डीएम-एसपी ने चयनित सहायक

प्रतिनिधियों को नियुक्ति पत्र वितरण करते जिलाधिकारी, एसएसपी व अन्य अथितिगण।

शोध अधिकारी (सांख्यिकी) पद पर चयनित आशीष कुशवाहा व अनिल कुमार गुप्ता को नियुक्ति पत्र बांटे। सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने जनप्रतिनिधियों समेत डीएम-एसपी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। इस मौके पर भाजपा नेता रविप्रकाश त्रिपाठी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक आरके करवरिया आदि मौजूद रहे।

देश को आजाद कराने वालों को रखें यादः विधायक

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। हर घर तिरंगा अभियान के तहत मानिकपुर ब्लाक प्रमुख अरविन्द कुमार मिश्रा ने मानिकपुर मंडल के भाजपा कार्यकर्ताओं को तिरंगा बांटा। स्वतंत्रता दिवस पर हर घर तिरंगा लहराने का अनुरोध किया।

मानिकपुर ब्लाक में मंगलवार को विधायक अविनाश चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि देश को आजाद कराने को क्रान्तिकारियों ने कुर्बानी दी थी, उन्हें हमेशा

तिरंगा बांटते विधायक।

याद रखना चाहिए। मानिकपुर ब्लाक प्रमुख अरविन्द कुमार मिश्रा ने कहा कि लम्बे संघर्षों बाद महापुरूषों ने देश को अंग्रेजी हुकूमत से आजाद कराया था। नई पीढी को हमेशा शहीदों के बलिदान को याद रखना चाहिए। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हर घर तिरंगा अभियान चलाया है। आज यहां तिरंगा वितरण हो रहा है। इस मौके पर सीडीओ अमृतपाल कौर, बीडीओ शैलेन्द्र सिंह, मानिकपुर मंडल अध्यक्ष मोहनदास मिश्रा, आनन्द द्विवेदी, विश्वास उपाध्याय, शोभित केशरवानी, सच्चिदानन्द द्विवेदी, अभिलाष जायसवाल, राजू त्रिपाठी, दिवाकर त्रिपाठी, विकास सोनकर, अंशू पाण्डेय, शिवकुमार विश्वकर्मा व धर्मेन्द्र मिश्रा आदि मौजूद रहे।

पूमावि बिहारा में बच्चों की बेहोशी से मचा हडकम्प

उमस भरी गर्मी से बेहोश हुए बच्चे, हालत ठीक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कर्वी ब्लाक के बिहारा गांव के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में प्रार्थना के समय उमस भरी गर्मी से अचानक बच्चों की हालत बिगडने लगी। बच्चे बेहोश होकर गिरने लगे। विद्यालय के तकरीबन दो दर्जन छात्र-छात्रायें बेहोश हो गये। सभी को आनन-फानन में सीएचसी शिवरामपुर में भर्ती कराया। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह व सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने बच्चों का हाल-चाल जाना।

ये हादसा मंगलवार को बिहारा गांव के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में हुआ। शिक्षक ने एम्बुलेंस की मदद से सभी को सीएचसी शिवरामपुर में भर्ती कराया। सूचना पर गांव में हड़कंप मच गया। परिजनों ने स्कूल जाकर बच्चों को देखा। कुछ अभिभावक बच्चों को साथ लेकर घर चले गये। पूर्व माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य राममिलन कुशवाहा ने बताया कि विद्यालय नियमित समय से खुला। छात्र-छात्राओं ने प्रार्थना की। सभी बच्चे अपनी-अपनी कक्षा में जाने लगे। इसी बीच उमस भरी गर्मी से बच्चे एक-एक कर बेहोश होने लगे। विद्यालय के छात्र-छात्रा सरोज, अंजना, सलोनी, प्रियंका, पूजा, खुशबू, लक्ष्मी, अर्चना, शिवांगी, गीता, शालिनी, गोलू, माया, मानसी, आराधना, कल्पना, रोशनी, शांति, भानु, विकास, रफीक, राहुल व सचिन बेहोश हो गये। ये बच्चे कक्षा 6-7-8 के हैं। बच्चों को शनिवार को एल्बेंडाजोल की गोली खिलाई थी। पूंछतांछ में पता चला कि बच्चों को शनिवार को एल्बेंडाजोल की गोली खिलाई थी। ये भी सामने आया कि बच्चों को समय से मिड-डे-मील नहीं मिला। मिड-डे-मील तैयार रखा है, उसके खाने से पहले बच्चे बेहोश होने लगे। सीएचसी के डॉ फूल सिंह ने बताया कि सभी बच्चों की हालत ठीक है। उमस भरी गर्मी से ये बेहोश हुए थे। पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार व सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने सीएचसी जाकर बच्चों का हाल जाना। उन्होंने बताया कि अब बच्चों की हालत ठीक है।

खतरे से बाहर हैं बच्चेः बीएसए

बीएसए बीके शर्मा।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिहारा में प्रार्थना दौरान बेहोश हुए बच्चों के मामले में जिला बेसिक शिक्षाधिकारी बीके शर्मा ने जिलाधिकारी को भेजी आख्या में कहा कि डॉक्टरों से बात हुई है। उमस भरी गर्मी में अचानक बच्चे बेहोश हुए थे। तबियत अब सही है। बच्चों को तत्काल सीएचसी में भर्ती कराया था। फिलहाल बच्चे खतरे से बाहर हैं। कुछ बच्चे घर से खाना खाकर आये थे। कुछ बच्चों को मिड-डे-मील खिलाया जाना था। उससे पहले ये घटना हो गई।

बच्चों का हाल जानते एसपी व सीएमओ।

स्कूल समय में विद्यालयों में रहे बिजलीः अखिलेश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष अखिलेश कुमार पाण्डेय ने पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिहारा में चक्कर आने से बच्चों के बेहोश होने की घटना को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया है। कहा कि उमस भरी गर्मी में जिले के अन्य विद्यालयों में भी एक-दो बच्चों के बेहोश होने की खबर मिलती रहती है। बेसिक शिक्षा विभाग ने हर शिक्षण कक्ष में पंखे तो लगाये हैं, विद्युत आपूर्ति न होने से मासूम बच्चों को लाभ नहीं मिल रहा। उमस भरी गर्मी में बच्चे बेहोश हो रहे हैं। जिला प्रशासन से अपील किया कि मासूम बच्चों के स्वास्थ्य के मद्देनजर विद्यालय समय में निर्बाध विद्युत आपूर्ति कराई जाये। शिक्षकों से अनुरोध किया कि प्रार्थना, पीटी, व्यायाम, योगा से पहले जिन बच्चों को दिक्कत हो, उन्हें शामिल न करें। पीटी, व्यायाम, योगा का समय कम कर दें, ताकि बच्चों को समस्या न हो। शिक्षक अभिभावकों से सम्पर्क कर बतायें कि मौसम प्रतिकूल है। बच्चों के खानपान पर ध्यान रखें। बासी खाना न खायें। शुद्ध पानी पियें व खाली पेट न रहें। एमडीएम रसोई में कुछ खुला न रहे।

शिक्षक नेता अखिलेश पाण्डेय।

शहीदों का बलिदान याद रखेगा हिन्दुस्तान के नारों से गूंजी तिरंगा यात्रा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजपा युवा मोर्चा ने राष्ट्रीय, प्रदेश व क्षेत्रीय नेतृत्व के आवाहन पर स्वतंत्रोत्सव पर मऊ/मानिकपुर विधानसभा में जिलाध्यक्ष युवा मोर्चा हीरो मिश्रा की अगुवाई में तिरंगा यात्रा निकाली। तिरंगा यात्रा जोरवारा टोल प्लाजा से शुरू होकर मऊ नगर पंचायत के मुख्य चैराहों से होते हुये सम्पन्न हुई।

मंगलवार को तिरंगा यात्रा में भारत माता की जय, वन्दे मातरम, वीर शहीदों का बलिदान याद रखेगा हिन्दुस्तान के नारे गुंजायमान होते रहे। डीजे पर

तिरंगा यात्रा निकालते भाजपाई।

राष्ट्रभक्ति गीतों की धुन पर युवा समूह उल्लास व उत्साह से झूमते रहे। तिरंगा यात्रा भाजयुमो महामंत्री मोहित मिश्रा के संयोजन में हुई। तिरंगा यात्रा में कानपुर-बुन्देलखण्ड क्षेत्र क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अनिल यादव, पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र, दिनेश तिवारी, जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय, जिला मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी, पूर्व विधायक आनंद शुक्ल, ब्लॉक प्रमुख रामनगर गंगाधर शुक्ला, मऊ सुशीला वर्मा समेत जनप्रतिनिधि, जिला पदाधिकारी, मंडल पदाधिकारी, मोर्चा पदाधिकारी सहभागी रहे। यात्रा बाद बलिदानी शहीदों को यादकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने भावांजलि अर्पित की। क्षेत्रीय उपाध्यक्ष/चित्रकूट प्रभारी अनिल यादव ने कहा कि तिरंगा यात्रा जन-जन के सहभाग से राष्ट्र के स्वतंत्रोत्सव का आयोजन है। तिरंगा यात्रा युवा शक्ति की ऊर्जा का प्रकटीकरण है। तिरंगा यात्रा में सब स्वतंत्रता के महत्व को समझने को संकल्पित भाव से जुड़े। इस मौके पर राजेश जायसवाल, आनंद पटेल, महेन्द्र कोटार्य, मनोज तिवारी, संजय पांडे, अभिषेक ओझा, उज्जवल गप्ता, महेश पांडे, पुष्पराज सिंह, आशीष पांडे, नागेन्द्र त्रिपाठी, अजय मिश्रा, अरविन्द शुक्ला, राजेन्द्र बच्चन त्रिपाठी, अतुल द्विवेदी, विकास साहू, राजीव शुक्ला, विकास मिश्रा आदि मौजूद रहे।

एक अदद आवास को तरस रहा ब्राम्हण परिवार

छानी-छप्पर में कर रहा गुजर

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। राजापुर तहसील के भदेहदू गांव में एक ऐसा ब्राह्मण परिवार हैं, जिसके रहने, खाने, सोने को छत नही है। केंद्र व प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना का लाभ ब्राम्हण परिवार को नहीं मिल रहा है।

मंगलवार को भदेहदू गांव के दिनेश कुमार मिश्रा पुत्र इंद्रनारायण मिश्रा के कई वर्षों से घर न होने का खुलासा हुआ। बताया गया कि अरसा पहले अतिवृष्टि से उसका घर जमीदोज हो गया था। तब से

छप्पर दिखाता पीडित।

उसी जमीन पर छानी-छप्पर डालकर जीवनयापन कर रहा है। बारिश के समय खाने व सोने में भारी दिक्कतें हो रही हैं। आवास से वंचित दिनेश कुमार मिश्रा पुत्र इन्द्रनारायण मिश्रा ने दुखी मन से बताया कि चार वर्षों से जिले के उच्चाधिकारियों व खण्ड विकास कार्यालय पहाड़ी तथा तहसील राजापुर के चक्कर काट रहा है। कोई अधिकारी पात्र व्यक्ति की नहीं सुन रहा। ग्राम पंचायत में सैकड़ों आवास मंजूर हुए हैं। उसके पत्र पर कोई विचार नहीं हो रहा। कई बार सूबे के मुख्यमंत्री शिकायत पोर्टल पर करुण कहानी लिखकर आवेदन किया था। अधिकारियों-कर्मचारियों ने फर्जी आख्या लगाकर उसे अपात्र बना देते हैं। प्रधान भदेहदू पुनीत कुमार उपाध्याय ने बताया कि 2022-23 में दिनेश कुमार मिश्रा पुत्र इंद्र नारायण मिश्रा को ग्रामीण आवास को चयनित किया था। प्रस्ताव बनाकर खण्ड विकास कार्यालय पहाड़ी भेजा जा चुका है। अस्थाई निवास प्रमाण पत्र भी जारी किया है। आगामी समय में ग्रामीण आवास देने को पुनः प्रस्ताव किया जाएगा।

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार गिराने में भूमिका से अमेरिका का इनकार

बांग्लादेश

अमेरिका ने कहा है कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को हटाने में उसकी कोई भूमिका नहीं थी. व्हाइट हाउस ने सोमवार को अमेरिकी हस्तक्षेप के आरोपों को "सिर्फ झूठा" बताया.

अमेरिका ने कहा है कि दक्षिण एशिया के देश बांग्लादेश की राजनीतिक उठापटक में उसकी कोई भूमिका नहीं है. व्हाइट हाउस की प्रवक्ता कैरिन ज्यां-पिएरे ने पत्रकारों से बातचीत में कहा, "हमारा इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं है. यह आरोप या अफवाहें कि अमेरिका की सरकार इन घटनाओं में शामिल थी, बिल्कुल गलत हैं."

रविवार को भारत के इकोनॉमिक टाइम्स अखबार में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया था कि हसीना ने अमेरिका पर उन्हें हटाने की कोशिश का आरोप लगाया क्योंकि अमेरिका बांग्लादेश के सेंट मार्टिन द्वीप पर नियंत्रण चाहता था. अखबार ने कहा कि हसीना ने यह

संदेश अपने करीबी सहयोगियों के माध्यम से दिया था.

हालांकि हसीना के बेटे सजीब वाजेद ने इस बात का खंडन करते हुए रविवार को सोशल मीडिया साइट 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि उन्होंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया था.

ज्यां-पिएरे ने कहा, "हमारा मानना है कि बांग्लादेश की जनता को वहां की सरकार का भविष्य तय करना चाहिए और इस मामले में हमारा यही रुख है. "

बांग्लादेश में करीब एक महीने चले प्रदर्शनों के बाद पिछले हफ्ते प्रधानमंत्री शेख हसीना ने इस्तीफा दे दिया था और वह भारत चली गई थीं. उसके बाद देश में एक अंतरिम सरकार बनाई गई,

जिसका नेतृत्व नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मोहम्मद युनूस को सौंपा गया.

इसी साल जनवरी में आम चुनाव में चौथी बार जीतने के बाद हसीना ने सत्ता संभाली थी, लेकिन विपक्ष ने चुनाव का बहिष्कार किया था और अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा था कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष नहीं था. अपने चौथे कार्यकाल में हसीना सात महीने ही पद पर रह पाईं और इस्तीफे के साथ उनके 15 साल के निरंतर शासन का अंत हो गया.

क्यों आया सेंट मार्टिन का जिक्र

कुछ खबरों में आरोप लगाया गया कि शेख हसीना की सरकार गिरने की वजह सेंट मार्टिन द्वीप में अमेरिका की दिलचस्पी है. भारतीय मीडिया में कहा गया था कि शेख हसीना पांच अगस्त को देश छोड़ने से पहले राष्ट्र को संबोधित करना चाहती थीं।

साबित हो गया! मोदी सरकार से डबल गेम खेल रहा रूस, भारत के सबसे बड़े दुश्मन को बेचा जासूसी ड्रोन

मॉस्को: भारत को जिगरी दोस्त बताने वाले रूस ने पाकिस्तान को सुपरकैम ड्रोन बेचे हैं। सुपरकैम ड्रोन दुश्मन के इलाके की जासूसी करने के साथ ही हमला भी कर सकता है। यह ड्रोन पेलोड भी ले जा सकता है। इस ड्रोन को पाकिस्तान को बेचने का खुलासा खुद डेवलपर अनमैन्ड सिस्टम्स ग्रुप ने आर्मी-2024 इंटरनेशनल मिलिट्री-टेक्निकल फोरम के दौरान किया है। सुपरकैम र350 ड्रोन सात घंटे तक हवा में रह सकता है और लंबी दूरी तक सूचना प्रसारित कर सकता है। हालांकि, कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि पाकिस्तान इस सुपरकैम ड्रोन का इस्तेमाल पहले से ही भारत की सीमा पर कर रहा है। इसके बाद यह सवाल भी उठ रहा है कि रूस कहीं भारत के साथ डबल गेम तो नहीं खेल रहा है।

रूस पर क्यों हो रहा धोखेबाजी का शक

इस साल जुलाई की शुरूआत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिमी देशों के विरोध के बावजूद रूस की यात्रा की थी। इस दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के गले मिलते एक तस्वीर भी खूब वायरल हुई थी। अमेरिका, यूक्रेन समेत कई पश्चिमी देशों ने पुतिन के गले मिलने को लेकर भारत की आलोचना भी की थी। हालांकि, इस दौरान एक और तस्वीर सामने आई थी, जिसमें रूसी रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों के साथ बैठक करते नजर आए थे। इस बैठक को भी भारत के लिए खतरा बताया गया था, क्योंकि पारंपरिक रूप से पाकिस्तान और रूस के बीच सैन्य गठबंधन नहीं है।

सुपरकैम ड्रोन कितना खतरनाक

सुपरकैम एस-250 को इसकी सामरिक और तकनीकी श्रेष्ठता के लिए जाना जाता है।

बांग्लादेश में सांप्रदायिक तनाव और बढ़ने का अंदेशा

बांग्लादेश

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार गिराने में भूमिका से अमेरिका का इनकारबांग्लादेश के राजनीतिक संकट के पीछे नहीं अमेरिका का हाथ, व्हाइट हाउस ने आरोपों को बताया झूठा

बांग्लादेश में स्थितियां अब भी संवेदनशील बनी हुई हैं. अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के लोगों पर हमले जारी हैं. अंतरिम सरकार में गृह विभाग के सलाहकार जनरल एम. शखावत हुसैन ने माना है कि अल्पसंख्यकों पर हमले हुए हैं.

बांग्लादेश में नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार के शपथ लेने और हिंसा रोकने की अपील के बावजूद विभिन्न इलाकों में अल्पसंख्यक हिंदू तबके के लोगों पर हमले जारी हैं. खुलना के अलावा रंगपुर, दिनाजपुर, सातखीरा, चटगांव, किशोरगंज, सिराजगंज और हबीगंज के विभिन्न इलाकों में हमलों के साथ आगजनी और लूटपाट का सिलसिला तेज होने की खबर है.

बीते सप्ताह आंदोलनकारियों ने राजधानी ढाका में जाने-माने गायक राहुल आनंद का पुश्तैनी घर भी जला दिया. इसमें संगीत के तमाम साजो-सामान भी जलकर राख हो गए. अब अल्पसंख्यक तबके के लोग इसके खिलाफ एकजुट होकर प्रदर्शन कर रहे हैं. चटगांव और ढाका समेत कई बड़े शहरों में हिंदुओं के विरोध प्रदर्शन के कारण देश में सांप्रदायिक तनाव का अंदेशा बढ़ गया है.

मंदिरों की सुरक्षा में सेना तैनात

इस बीच, अंतरिम सरकार में गृह विभाग के सलाहकार जनरल एम. शखावत हुसैन ने माना है कि अल्पसंख्यकों पर हमले हुए हैं और उनकी सुरक्षा में चूक हुई है. उन्होंने हिंदुओं से इसके लिए माफी भी मांगी है.

हिंदू परिवारों का कहना है कि इस हिंसा ने 1971 के मुक्ति युद्ध के दौरान पाकिस्तानी सेना की ओर से किए गए अत्याचार के जख्मों को ताजा कर दिया है. कुछ इलाकों से हिंदुओं के मोहल्लों और मंदिरों की सुरक्षा में तैनात मुस्लिम युवकों की तस्वीरें और खबरें भी सामने आ रही हैं. हालांकि, इनके मुकाबले हमले की घटनाएं कहीं ज्यादा हैं.

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार गिराने

में भूमिका से अमेरिका का इनकार

बड़े पैमाने पर हिंसा और थानों पर हमले के बाद देश के तमाम पुलिस स्टेशन खाली हो गए थे. बीते हफ्ते आंदोलनकारियों के हमले में 14 पुलिसवालों की मौत के बाद तमाम पुलिसकर्मी अपनी जान बचाकर भाग गए थे।

हिंदू समुदाय डरा हुआ है

दक्षिण एशिया के बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं के बढ़ते पलायन के कारण उनकी आबादी में लगातार गिरावट आ रही है. 2011 की जनगणना में जहां हिंदुओं की आबादी 8.54 फीसदी थी, वहीं 2023 की जनगणना में यह घटकर 7.95 फीसदी रह गई है. देश की कुल आबादी करीब 16.51 करोड़ है.

हिंदुओं की आबादी के लिहाज से सिलहट डिवीजन पहले स्थान पर है. इसके बाद क्रमशः खुलना, बरिसाल, चटगांव, राजशाही, ढाका और मैमनसिंह डिवीजन का स्थान है. बांग्लादेश के चार जिले ऐसे हैं, जहां हिंदू समुदाय की आबादी 20 फीसदी से अधिक है. ढाका डिवीजन का गोपालगंज हिंदुओं की आबादी के लिहाज से पहले स्थान पर है. यहां कुल आबादी में 26.94 फीसदी हिंदू हैं. लेकिन यहां रहने वाले हिंदू परिवार भी 5 अगस्त से आतंक में दिन काट रहे हैं.

लोगों ने क्या अनुभव बताए?

सुप्रतिम मंडल, सिलहट डिवीजन के मौलवीबाजार जिले के दासपाड़ा मोहल्ले में रहते हैं. उन्होंने डीडब्ल्यू को बताया कि 5 अगस्त की सुबह से ही माहौल बेहद तनावपूर्ण हो गया था. पुलिस प्रशासन या कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं बची थी. सड़कों पर सेना जरूर तैनात थी, लेकिन वे लोग चुप्पी साधे खड़े थे. बरसों से साथ रहने वाले पड़ोसी भी खून के प्यासे हो गए थे. सुप्रतिम अपने परिवार के साथ किसी तरह बंगाल के उत्तर 24-परगना जिले में रहने वाले एक रिश्तेदार के घर पहुंचे हैं.

ढाका से करीब 100 किलोमीटर दूर मदारीपुर जिले में रहने वाले सरकारी कर्मचारी तपोब्रत मजूमदार फोन पर हुई बातचीत में डीडब्ल्यू से कहते हैं, "मेरे गांव में रातभर हिंसा का तांडव चला है. इसमें कई घर जला दिए गए हैं ।

वांग यी और ईरान के कार्यवाहक विदेश मंत्री के बीच फोन वार्ता

बीजिंग। चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने रविवार को ईरान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अली बाघेरी के साथ फोन पर वार्ता की। इस मौके पर वांग यी ने कहा कि ईरान महत्वपूर्ण प्रभाव वाला क्षेत्रीय देश है।

चीन और ईरान व्यापक रणनीतिक साझेदार हैं। चीन हमेशा रणनीतिक और दूरदर्शी दृष्टिकोण से ईरान के साथ संबंधों को बढ़ाता है। चीन, ईरान की नई सरकार के साथ एक-दूसरे के मूल हितों से जुड़े मुद्दों पर दृढ़ता से समर्थन करना चाहता है और विभिन्न क्षेत्रों में व्यवहारिक सहयोग व द्विपक्षीय संबंधों का स्वस्थ विकास बढ़ाना चाहता है।

वहीं, बाघेरी ने चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के प्रति ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान के शपथ ग्रहण समारोह में विशेष दूत को भेजने

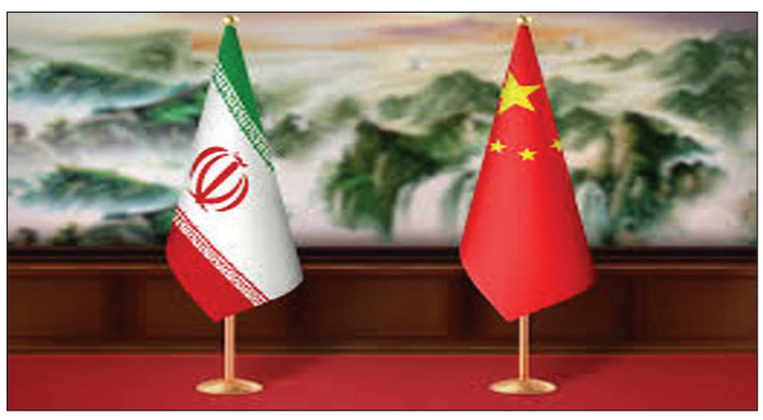

के लिए आभार जताया।

राष्ट्रपति पेजेशकियान मजबूती से ईरान-चीन संबंधों का विकास करना चाहते हैं, ताकि द्विपक्षीय संबंधों पर अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्थिति में हुए परिवर्तन का प्रभाव नहीं पड़े। ईरान अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मामलों में चीन के साथ संपर्क मजबूत करना चाहता है। दोनों पक्षों ने मुख्य रूप से मध्य-पूर्व क्षेत्र की स्थिति पर विचार-विमर्श किया।

बाघेरी ने कहा कि ईरान राष्ट्रीय प्रभुसत्ता, सुरक्षा और प्रादेशिक अखंडता की रक्षा करेगा और क्षेत्रीय सुरक्षा व स्थिरता की गारंटी भी करेगा।

वहीं, वांग यी ने कहा कि चीन मध्य-पूर्व क्षेत्र के मामलों में हमेशा न्याय को कायम रखता है और अपने कानूनी हितों की रक्षा करने में विभिन्न पक्षों का समर्थन करता है।

वर्तमान प्राथमिकता है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय एकजुट होकर स्थायी युद्धविराम के लिए स्थिति तैयार करेंगे। चीन ईरान के साथ घनिष्ठ संपर्क कामय रखना चाहता है।

बांग्लादेश के राजनीतिक संकट के पीछे नहीं अमेरिका का हाथ

वॉशिंगटन। बांग्लादेश में हुए तख्तापलट के बाद से इस अमेरिका पर आरोप लग रहे हैं। हालांकि, अब अमेरिका ने बांग्लादेश के राजनीतिक संकट में अपनी सरकार की संलिप्तता से इनकार किया है।

व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरिन जीन पियरे ने बांग्लादेश संकट से जुड़ी सभी रिपोर्टों और अफवाहों का खंडन किया और कहा, ह्लहमारी इसमें कोई संलिप्तता नहीं है। ऐसी कोई भी रिपोर्ट या अफवाह कि अमेरिका की सरकार इन घटनाओं में शामिल थी, सरासर झूठ है और बिलकुल भी सच नहीं है।"

जीन पियरे ने यह भी कहा कि बांग्लादेशी नागरिकों को अपने देश की सरकार का भविष्य तय करना चाहिए।

उन्होंने कहा, "यह बांग्लादेशी नागरिकों के लिए और उनके द्वारा चुना गया विकल्प है। हमारा मानना है कि बांग्लादेशी लोगों को बांग्लादेशी सरकार का भविष्य तय करना चाहिए और हम भी इसी पर कायम हैं। निश्चित रूप से हम किसी भी आरोप पर बोलते रहेंगे और मैंने यहां जो कहा है वह झूठ है। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हुए हमलों के खिलाफ व्हाइट हाउस के बाहर विरोध प्रदर्शन को लेकर भी जीन पियरे ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, ह्लहम निश्चित रूप से स्थिति की निगरानी रखना जारी रखेंगे। मेरे पास कहने या जोड़ने के लिए और कुछ नहीं है। जब भी किसी भी तरह के मानवाधिकार मुद्दे की बात आती है तो राष्ट्रपति सार्वजनिक रूप से और निजी तौर पर भी जोरदार तरीके से बोलते रहे हैं और वह ऐसा करते रहेंगे। लेकिन, इस समय मेरे पास बात करने के लिए कुछ विशेष नहीं है।

बता दें कि बांग्लादेश में प्रधानमंत्री शेख हसीना की सरकार के खिलाफ बड़े पैमाने पर हिंसक विरोध-प्रदर्शन हुए। इसके बाद शेख हसीना ने 5 अगस्त को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। वहां हालात इतने खराब हो गए कि उन्हें देश छोड़कर भारत आना पड़ा था।

पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के पद से हटने के बाद से बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं और अन्य लोगों को निशाना बनाया गया। इस घटना को लेकर दुनियाभर में विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि बांग्लादेशी अल्पसंख्यकों को बचाया जाए।

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को एक्स पर एक संदेश में बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और संरक्षण का आह्वान किया।

उन्होंने लिखा- "प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस को उनकी नई जिम्मेदारियों को संभालने पर मेरी शुभकामनाएं। हम हिंदुओं और अन्य सभी अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा और संरक्षण सुनिश्चित करते हुए जल्द ही सामान्य स्थिति में लौटने की उम्मीद करते हैं। भारत शांति, सुरक्षा और विकास के लिए हमारे दोनों लोगों की साझा आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए बांग्लादेश के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

सीरिया में भूकंप, रिक्टर स्केल पर 5.5 मापी गई तीव्रता

दमिश्क। सोमवार की रात मध्य-पूर्व एशियाई देश सीरिया के कई शहर भूकंप के तेज झटकों से हिल गए। भूकंप का केंद्र हामा शहर के पूर्व में 3.9 किलोमीटर की गहराई पर था।

सीरिया के राष्ट्रीय भूकंप केंद्र के मुताबिक सोमवार रात 11:56 बजे देश के कई शहरों में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। सबसे पहले देश के मध्य शहर हामा से 28 किमी पूर्व में 5.5 तीव्रता का

भूकंप आया।

समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक पहले आए भूकंप का केंद्र हामा से 21 किलोमीटर पूर्व में स्थित था। स्थानीय अधिकारियों ने भूकंप की वजह से हुए नुकसान की रिपोर्ट अभी तक जारी नहीं की है।

देश के सरकारी टेलीवीजन ने अपने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर लोगों को भूकंप से बचाव के लिए कई पोस्ट किए।

विनय मोहन क्वात्रा ने अमेरिका में भारतीय राजदूत का पद संभाला

अमेरिका। विनय मोहन क्वात्रा ने अमेरिका में भारतीय राजदूत का पदभार ग्रहण कर लिया है। उन्होंने तरनजीत सिंह संधू की जगह ली, जो इसी वर्ष सेवा निवृत्त हो गए हैं। उन्होंने इसकी जानकारी सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर दी। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा, अमेरिका में भारतीय राजदूत का पद ग्रहण करने का सौभाग्य मिला। यूएस में टीम इंडियन एम्बेसी इस महत्वपूर्ण साझेदारी को मजबूत करने के लिए गंभीरता से काम करना जारी रखेगी।"

विनय मोहन क्वात्रा इससे पहले विदेश सचिव भी रह चुके हैं। विदेश सचिव बनने से पहले वह चीन, अमेरिका, फ्रांस में भी विदेश मंत्रालय के अंतर्गत कई जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं।

क्वात्रा 1988 बैच के आईएफएस ऑफिसर हैं। इस समय उनको मोदी सरकार के पसंदीदा अफसरों में से एक माना जाता है। क्वात्रा इससे पहले नेपाल में भारत के राजदूत के तौर पर कार्यरत थे।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर

योग सत्संग समिति

द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज

1/6C माधव कुंज

कटरा प्रयागराज से मुद्रित

एवं

क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान

झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश

से प्रकाशित।

सम्पादक

स्वामी श्री योगी सत्यम्

RNI No: UPHIN/2001/09025

ऑफिस मो.:

9565333000

Email:-

akhandbharatsandesh1@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र

प्रयागराज होगा।

डोनाल्ड ट्रंप के इंटरव्यू से पहले एक्स पर साइबर हमला, एलन मस्क ने बताई वजह

वॉशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का एलन मस्क के साथ होने वाला इंटरव्यू साइबर हमले की वजह से रोकना पड़ा। इसकी जानकारी खुद एलन मस्क ने दी।

यूएस ईस्टर्न टाइम के अनुसार, एलन मस्क का डोनाल्ड ट्रंप के साथ इंटरव्यू शाम 8 बजे के लिए निर्धारित था। मस्क ने एक पोस्ट में बताया कि ऐसा प्रतीत होता है कि एक्स पर बहुत बड़ा डीडीओएस हमला हुआ है। इसे बंद करने पर काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा, ह्लहम कम संख्या में लाइव दर्शकों के साथ इंटरव्यू को आगे बढ़ाएंगे और बाद में बातचीत को पोस्ट करेंगे।

एक व्याख्या के अनुसार, डिस्ट्रिब्यूटेड डेनियल-ऑफ-सर्विस अटैक (डीडीओएस) एक प्रकार का साइबर हमला है, जिसमें साइबर हमलावर

ट्रैफिक को बढ़ाकर किसी वेबसाइट, सर्वर या नेटवर्क संसाधन को प्रभावित करता है।

पूर्व राष्ट्रपति को जनवरी 2021 में एक्स से स्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया था।। उस दौरान सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को ट्विटर के नाम से जाना जाता था। हालांकि, बाद में मस्क ने ट्विटर को खरीद लिया और उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप पर लगा प्रतिबंध भी हटा लिया था।

ट्रंप की अगस्त 2023 में एक्स पर वापसी हुई और उन्होंने एक पोस्ट के माध्यम से इसकी जानकारी दी। ट्रंप की एक्स पर वापसी के बाद उनके फॉलोअर्स की संख्या 300,000 और बढ़ गई। उनके कुल 88.3 मिलियन फॉलोअर्स हो गए हैं। उनके ट्रुथ अकाउंट पर 7.5 मिलियन फॉलोअर्स हैं। वे ट्रुथ प्लेटफॉर्म पर काफी एक्टिव हैं।

बता दें कि राष्ट्रपति जो बाइडेन ने हाल ही में राष्ट्रपति चुनाव की रेस से अपना नाम वापस ले लिया था। अब उनकी जगह डेमोक्रेटिक पार्टी से राष्ट्रपति की रेस में कमला हैरिस हैं। वे रिपब्लिकन पार्टी के डोनाल्ड ट्रंप को आगामी चुनाव में चुनौती देती हुई दिखाई देंगी।

भारत में रेडियोएक्टिव पदार्थ... दुनिया के सामने जोर-जोर से चिल्ला रहा पाकिस्तान

इस्लामाबादः पाकिस्तान इन दिनों दुनिया के सामने जोर-जोर से चिल्लाकर भारत की बुराई करने में व्यस्त है। इसके लिए पाकिस्तान को नया मसाला बिहार से मिला है। दरअसर, कुछ दिनों पहले बिहार के गोपालगंज जिले में पुलिस ने रेडियोएक्टिव पदार्थ बरामद किया था। यह पदार्थ तस्करी कर ले जाया जा रहा था, लेकिन पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई कर जब्त कर लिया। अब पाकिस्तान इसी मुद्दे को भुनाने में जुट गया है। वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह साबित करने की कोशिश कर रहा है कि भारत में रेडियोएक्टिव पदार्थों की कालाबाजारी हो रही है।

पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने क्या कहा

पाकिस्तान के विदेश कार्यालय ने बयान जारी कर कहा, "भारत में परमाणु और अन्य रेडियोएक्टिव सामग्रियों की चोरी और अवैध बिक्री की घटनाओं की बार-बार होने वाली रिपोर्टों से वह बहुत चिंतित है।

ये बार-बार होने वाली घटनाएं परमाणु और अन्य रेडियोधर्मी सामग्रियों की सुरक्षा के लिए नई दिल्ली द्वारा उठाए गए कदमों पर सवाल उठाती हैं।"